ا
से
ی ے
तक

ا	ب	پ	ت	ٹ	ث	ج	چ
ح	خ	د	ڈ	ذ	ر	ڑ	ز
ژ	س	ش	ص	ض	ط	ظ	ع
غ	ف	ق	ک	گ	ل	م	ن
و	ہ	ھ	ء	ی	ے		

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए
ऐ	ओ	औ	अं	अः	क	ख	ग
घ	ड	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ

ملکہ خورشید

ا
से
ی ے
तक

मलिका खुर्शीद

نام کتاب	:	اسے ہی تک
مصنفہ	:	ملکہ خورشید
صفحات	:	۱۱۶
طباعت	:	نعمانی پرنٹنگ پریس، لکھنؤ
کمپوزنگ	:	محمد فیضان
تعداد	:	۵۰۰
سن اشاعت	:	۲۰۱۳ء
قیمت	:	۱۰۰ روپیے

Malika khursheed
7/3, Sirishthi Apartment
Madan Mohan Malvia Road
Lucknow.
Mob: 9415010614

ملنے کے پتے۔

دانش محل، امین آباد، لکھنؤ
مکتبہ جامعہ لمیٹڈ، جامعہ نگر، نئی دہلی

एक नज़र में

ایک بات

اس زمین پر انسان ہی ایک ایسی مخلوق ہے جسے قدرت نے زبان کی نعمت عطا کی ہے۔ اُسے سوچ وفکر کی صلاحیت دی ہے، خواب دیکھنے کی نعمت بھی دی ہے۔

یوں تو ہر ذی روح بولتا ہے، بلکہ سب اپنی اپنی بولیاں بولتے ہیں۔ لیکن زبان صرف انسان بول سکتے ہیں اور بولنا سیکھتے ہیں۔ یہ ایک اختیاری عمل ہے۔ کسی زبان کو بولنا، پڑھنا اور لکھنا سیکھنا ایک اختیاری عمل ہے جو بہ ہوش وحواس اور ارادہ کر کے کیا جاتا ہے۔ تعلیم وتربیت اسی سلسلے کی ایک کڑی ہے جس کا راستہ درس وتدریس کی دنیا سے ہو کر گزرتا ہے۔ درس وتدریس ایک مستقل سلسلہ باعمل ہے جس کی کوئی بندش مقرر نہیں ہے، کوئی حد متعین نہیں ہے۔ لیکن روایتی تعلیم کی ایک الگ اہمیت ہے جسے نظر انداز نہیں کیا جاسکتا اور مکتبی تعلیم کا اہم ترین اور قدیم ترین ذریعہ زبان ہی ہے۔

اردو ہمارے ملک کی ایک ترقی یافتہ زبان ہے اور موجودہ دور کی دیگر زبانوں کے مقابلے میں نسبتاً نئی زبان ہے جو ہندوستان کے کروڑوں لوگوں کی مادری زبان کی حیثیت رکھتی ہے۔ یہ زبان ملک کے تقریباً ہر حصّے میں سمجھی جاتی ہے۔ چند صوبوں میں اردو مقبولِ خواص وعوام ہے۔ شاعری، فلم اور ٹیلی ویزن نے اردو کو گھروں میں، گاؤں گاؤں تک پہنچا دیا ہے۔ لوگ آرام سے اردو بولتے

ہیں لیکن اسے ہندی کے نام سے جانتے ہیں جو اردو کا ہی پُرانا اور پہلا نام ہے۔
چونکہ یہ زبان ہند کی سرزمین پر پنپی، پھلی پھولی اور پہچانی گئی، اس تعلق سے اس زبان کو ''ہندی'' یعنی ہند کی ــــ اور ''ہندوی'' کہا گیا۔ کچھ عرصہ بعد اس زبان کے لئے ''اردو'' کا نام تجویز پایا۔ اردو کے لفظی معنی ''لشکر'' کے ہیں۔ لشکر ترکی زبان کا لفظ ہے۔ چونکہ اس زبان کا گہوارہ دورِ مغلیہ میں حکومت کے لشکروں میں جمع افراد کی زبانوں کے اثرات نے تیار کیا اس لیے اس پنپتی ابھرتی زبان کے لیے ''اردو'' کا لفظ زیادہ موزوں قرار پایا۔ دنیا کی عام ترقی یافتہ زبانوں کی طرح اردو میں بھی درجنوں زبانوں کے لاکھوں الفاظ شامل ہوئے اور اردو کا حصّہ بن گئے ہیں۔ اب اگر انھیں اردو سے نکال دیا جائے تو اردو اور اُن الفاظ دونوں کے ساتھ زیادتی ہوگی۔ ضلع، تحصیل، دواخانہ، وکیل، عدالت، ناشتہ، خستہ، دروازہ، بیماری، علاج، دوا، خبر، اخبار، جُرم، شرم، ضمانت، اس طرح کے بے شمار الفاظ ایسے ہیں جن سے بچ کے ہم رہ نہیں سکتے ہیں۔

یہ بات ہمیشہ ذہن میں ہونی چاہئے کہ کوئی زبان ہوا میں یا خلا میں پیدا نہیں ہوتی، نہ ہی زبان کا جنم کسی جاندار یا پودوں کی طرح ہوتا ہے۔ تاہم پہلے سے موجود زبانیں ہی کسی نئی زبان کے سامنے آنے کی وجہ بنتی ہیں اور اس زبان کے بولنے والوں سے ہی نئی زبان کی شروعات ہوتی ہے اور ارتقا ہوتا رہتا ہے۔ ردّ و بدل یا بدلاؤ ہی کسی زبان کی زندگی ہے۔ کیونکہ کسی زبان کے بولنے والے نہ ہوں تو ہر زبان سمٹنے لگتی ہے۔ ہر زندہ زبان کے لیے تبدیلیاں فطری ہیں، یہ نہ ہوں تو زبان رُکنے لگتی ہے،

ٹھٹھرنے لگتی ہے یہاں تک کہ وہ ایک مردہ زبان کی حیثیت سے تاریخ میں پناہ لے لیتی ہے۔ کئی زبانیں اس انجام کو پہنچی ہیں۔

اردو ایک زندہ زبان ہے، اس کا تعلق زبان کے ہند آریائی خاندان سے ہے۔ لکھاوٹ کے لیے اردو نے فارسی و عربی رسم الخط کو اپنا لیا کیونکہ یہی اس کے مزاج سے سب سے زیادہ قریب تھا۔ فارسی و عربی کے بے شمار الفاظ آج اردو زبان کی روح بن گئے ہیں۔ ہند میں انگریزوں کے تسلط بڑھنے کے بعد مغل دورِ حکومت میں ہی ۱۸۳۵ء میں انگریزوں نے فارسی کی جگہ اردو کو سرکاری اور عدالتی زبان بنا دیا جو ایک طویل عرصے تک اپنے مقام پر رہی۔ لیکن آزاد ہند میں جب ۱۹۵۰ء میں جمہوریہ ہند کا آئین بنا تو ایک بار پھر سرکاری زبان کی تجدید کی ضرورت محسوس ہوئی اور جمہوریت ہونے کی وجہ سے عوام الناس کی رائے مطلوب ہوئی۔ دونوں ایوانوں کے ممبران کی رائے آدھی آدھی بٹ گئی تو صدر وقت کا ووٹ اردو کی مخالفت میں آیا اور ہندی ملک کی سرکاری زبان بن گئی۔ لیکن اردو کا جادو عوام کے دلوں پر آج بھی ہے۔

اردو جس دوراہے پر ہندی سے الگ ہے وہ اس کا رسم الخط ہے، یعنی زبان کا پیراہن یا لباس —— ورنہ اردو کو ہندی سے الگ کرنا، فرق کرنا آسان نہیں ہے۔ بھارت کی کئی ریاستیں جن کی اپنی لسانی حیثیت نہیں یعنی جن کی اپنی کوئی الگ زبان نہیں جیسے، دہلی، یوپی، بہار، مدھیہ پردیش وغیرہ ایسے صوبوں میں ثانوی زبان کی حیثیت سے اردو لکھنا پڑھنا سیکھنا دشوار امر نہیں ہے کیونکہ سیکھنے والے کو رسم الخط سیکھنا ہی ایک مرحلہ درپیش ہوتا ہے۔ اکثر لفظیات، جملوں کی ساخت، قواعد سب کچھ وہی ہے جو ہندی کی ہیں۔ اس لیے دہلی، اتر پردیش، مدھیہ پردیش، بہار وغیرہ ریاستوں

کے باشندوں کے لیے اردو لکھنا پڑھنا سیکھنا نسبتاً آسان ہوگا۔

زیرِ نظر کتاب ''الف سے ي یے تک'' کا دائرہ کار و عمل دراصل ایسے علاقے کے ہی طلبہ ہیں جن کی بنیادی اور مادری زبان ہندی ہے۔ اس سے اس کتاب کا ذریعہ ہدایت، یعنی سکھانے کا ذریعہ دیوناگری رسم الخط کو ہی بنایا گیا ہے۔ یوں تو اس بہولسانی ملک میں اور جدید دور میں اردو سکھانے والی متعدد کتابیں دستیاب ہیں، بازار میں موجود ہیں۔ یہ کتاب بھی اس سلسلے کی ایک کڑی کہی جا سکتی ہے یہ کوشش کتنی کامیاب ہے یا کتنی الگ ہے اس کا فیصلہ اس کو پرکھنے کے بعد ہو سکے گا۔ یہ سچ ہے کہ اردو زبان لکھنا، پڑھنا، سیکھنا اصل میں اردو رسم الخط سیکھنا ہے۔ اور یہ رسم الخط سیکھنا اس لئے لازمی ہے کہ ہر زبان اپنے رسم الخط کے ساتھ ہی اپنی پہچان رکھتی ہے۔ یہ حقیقت ہے کہ چند ایک زبانوں نے اپنا رسم الخط بدلا ہے لیکن اردو کے لیے یہ صحت مند عمل نہیں ہے۔

اس کتاب میں رسم الخط یعنی لپی سے متعلق چھوٹی بڑی تمام باتیں الگ الگ طور پر صاف صاف بتانے کی کوشش کی گئی ہے اور چونکہ بتانے کی بھاشا ہندی لپی دیوناگری ہے اس لیے یقین ہے کہ کوشش ضرور بار آور ہوگی۔

ملکہ خورشید

भाषा एक परिचय

भाषा चाहे कोई हो संसार के किसी कोने की हो मानव समाज को कुदरत की बहुत बड़ी देन है। इंसानी समाज के साथ ही भाषा की कल्पना है और इस का वजूद भी है। इंसानों के बीच आपस में संबन्धों और संपर्क को बनाए रखने के लिय सूत्र भाषा ही है। जिस से इंसान अपने भावों और विचारों को दूसरों पर ज़ाहिर करता है। और अपना पक्ष किसी के सामने रख सकता है।

ज़रा गौ़र कीजिये भाषा या ज़बान अस्ल में है क्या ? ज़बान इंसानी आवाजो़ं के उस गुलदस्ते को कहते हैं जो सुइच्छा से इरादा कर के मुख से निकाली जाती है। हर आवाज़ एक न एक चिन्ह या Symbol की हैसियत रखती है। इन आवाजों की नियमित सुइच्छा से किया गया उच्चारण ही किसी भाषा का अधार बनता है। जब भी इन आवाज़ों का चित्रण किया गया उसे वर्णमाला का नाम मिला। हर भाषा के अक्षर असल में उस भाषा में मौजूद आवाजो़ं के चित्र होते हैं, हर इकाई एक अक्षर का रूप लेती है। अक्षरों का उच्चारण मुंह के अंदर जीभ और उसके आसपास के अंगों की सहायता से किया जाता है। जिन्हें Point of Articulation कहते हैं।

याद रखिये की इंसान की बोली हुई आवाज़ें जब अपने निर्धारित चिन्ह बनाती हैं तो अक्षर बनते हैं। आज हम सभी जानते हैं कि हर भाषा की अपनी वर्णमाला होती है या वह पहले से मौजूद किसी भाषा की वर्णमाला को जो उसके अनूकूल हो अपना लेती है। उर्दू में भी अर्बी फ़ारसी लिपि को

अपनाया और अपने मिज़ाज के अनुकूल कुछ नये अक्षर भी बनाये। क्योंकि हर भाषा के अक्षर उस में मौजूद आवाज़ों के ही चित्र होते हैं जो भाषा को चित्रित करते हैं। इसे लिखित रूप देते हैं।

उर्दू की वर्णमाला भी दो मुख्य आवाज़ों पर आधारित है।

1– Vowels स्वर

2– Consonants व्यंजन

दस आवाज़ें Vowels और 22 आवाज़ें Consonant हैं। दो अक्षर Semi Vowels को लिखते हैं।

उर्दू दाईं ओर से बाईं ओर लिखी जाने वाली एक Indo-Aryan ज़बान है। इसकी लिपि अरबी–फ़ारसी भाषा से ली हुई है। जिस तरह अंग्रेज़ी ने Roman को अपनी लिपि चुना और हिन्दी भाषा ने देवनागरी लिपि को अपनाया उसी तरह उर्दू ने अपने लिये Persio-Arabic लिपि को अनुकूल होने की वजह से अपना लिया। लेकिन इसके बावजूद उर्दू ने ऐसी तमाम आवाज़ों को अपनी वर्णमाला में शामिल किया जो फ़ारसी और अरबी वर्णमाला में नहीं थीं। चूंकि भौगोलिक और क्षेत्रिय प्रभाव के तहत उर्दू भाषा में ऐसी आवाज़ें आ गईं जिनके लिखने के लिये अक्षरों के रूप में आवाज़ों का चित्रण हुआ। उर्दू के Aspirated और Retroflex आवाज़ों वाले अक्षर इसके जिवित उदाहरण हैं।

उर्दू का व्याकरण मग़रबी शोरषेनी अपभरंश पर ही अधारित है। तेरहवीं शताब्दी से ही उर्दू भाषा में साहित्य का काफ़ी धन इक्ट्ठा होने लगा था। यह वह समय है जब मुग़लों का राज दिल्ली और इसके आस–पास चल रहा था। उर्दू के साथ लशकर और बाज़ार या दरबार की भाषा होने

की कल्पना जुड़ी थी लेकिन यह सच है कि मुग़लों के दौर में ही उर्दू को बहुत ज़्यादा तरक़्क़ी हुई।

दुनिया में उर्दू बोलने वाले सौ करोड़ से ज़्यादा हैं। जिनमें हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मे इनकी बहुतायत है। उर्दू पाकिस्तान की सरकारी ज़बान है और यह 1951 में हिन्दुस्तान की सरकारी ज़बान होते होते रह गई। फिर भी आज उर्दू भारत के कई राज्यों की दूसरी सरकारी भाषा का दर्जा रखती है।

उर्दू बारहवीं शताब्दी में दिल्ली के आस पास बोली जाने वाली क्षेत्रिय बोली.......से ही उभरी है। उर्दू के पहले मशहूर शायर के तौर पर अमीर ख़ुसरो का नाम आता है जिन्होंने पहेलियां, चौपाइयां और दोहे उस दौर की जनता की जन लोक की बोली में कहे गये जो आज उर्दू के शुरूआती दौर के नमूने माने जाते हैं। उस दौर में उर्दू के कई नाम आम हुए– हिन्दवी–हिन्दी–रेख्त्रती–दखनी–हिन्दुस्तानी– अंत में सिर्फ़ उर्दू नाम को इस भाषा ने अपना लिया जो आज तक क़ायम है।

उर्दू और हिन्दी में लिपि को छोड़ कर बाक़ी तमाम बातें मिलती जुलती हैं। शब्दकोष के स्तर पर भी एक भेद है कि हिन्दी में अपने शब्दों के लिये संस्कृत को आधार बनाया और उर्दू ने फ़ारसी और अरबी को इसके अलावा उर्दू और हिन्दी के व्याकरण और स्वर व व्यंजन लगभग एक जैसे ही हैं। एक उन्नत भाषा की तरह उर्दू में भी आज दर्जनों भाषाओं के शब्द घुले मिले मौजूद हैं।

याद रखने की बातें

1– उर्दू में 36 अक्षर हैं जिन्हें हर्फ़ कहते हैं।

2– हर्फ़ों के अलावा कुछ ख़ास चिन्ह का प्रयोग भी उर्दू लिपि

में होता है। जो एराब कहलाते हैं।

3— उर्दू हर्फ़ों के स्वभाव में है कि वह दूसरे हर्फ़ों में जुड़ जाते हैं। जुड़ते समय अधिकांश हर्फ़ अपना आधे से ज़्यादा भाग त्याग कर दूसरे हर्फ़ से मिलते हैं।

4— जुड़ने वाले हर्फ़ों में आठ ऐसे हैं जो अपना आकार बिल्कुल ही बदल देते हैं।

5— शब्द के अंत मे हर हर्फ़ अपने पूरे आकार में लिखा जाता है।

6—उर्दू के 9 हर्फ़ ऐसे हैं जो अपने आगे आने वाले किसी हर्फ़ से नहीं जुड़ते, यह Non Connectors कहलाते हैं।

7— उर्दू में भी 10 स्वर बोले जाते हैं जिन्हें लिखने के लिये चार हर्फ़ों और चार एराबों का प्रयोग होता है।

8— दो हर्फ़ Semi Vowel को लिखते हैं।

9— अलिफ़ उर्दू का पहला हर्फ़ है। शब्द के शुरू में इसकी अपनी कोई आवाज़ नहीं होती। यह एक लिखित संकेत की हैसियत रखता है। अपनी कोई आवाज़ देने के लिये अलिफ़ को एराब का सहयोग लेना पड़ता है। एराबों के साथ अलिफ़ अ, इ, उ की आवाज़ को लिखता है।

10— शब्द के बीच और आख़िर में अलिफ़ आ स्वर को लिखने में समर्थ है।

11—आगे — अक्षर को हर्फ़

— शब्द को लफ्ज़

— पाठ को सबक़

— अभ्यास को मश्क़

— भाषा को ज़बान लिखा जायेगा।

अक्षर एक परिचय

ज़बान कोई भी हो उसके अक्षर या Letter इंसान की स्वेक्षा से बोली गई आवाज़ों की तस्वीर होते हैं। हर भाषा ने इनका आकार निर्धारित किया है। उर्दू के अक्षर भी इसकी मिसाल है।

उर्दू में अक्षरों की संख्या 36 है जिन्हें हर्फ़ कहते हं। उर्दू वर्ण माला को हरूफ़–ए–तहज्जी कहा जाता है।

उर्दू हर्फ़—एक नज़र में

हर्फ़ के टूटे आकार			हर्फ़ की आवाज़		हर्फ़ का नाम	
					अलिफ़	ا
بـ	ـب	ب	/b/	ब	बे	ب
پـ	ـپ	پ	/P/	प	पे	پ
تـ	ـت	ت	/t/	त	ते	ت
ٹـ	ـٹ	ٹ	/t/	ट	टे	ٹ
ثـ	ـث	ث	/s/	स	से	ث
جـ	جـ	ج	/J/	ज	जीम	ج
چـ	چـ	چ	/c/	च	चे	چ
حـ	حـ	ح	/h/	ह	हे	ح
خـ	خـ	خ	/x/	ख़	ख़े	خ
		د	d	द	दाल	د
		ڈ	ḍ	ड	डाल	ڈ
		ذ	Z	ज़	ज़ाल	ذ
		ر	r	र	रे	ر
		ڑ	ṛ	ड़	ड़े	ڑ
		ز	Z	ज़	ज़े	ز
		ژ	z	ज	जे	ژ

उर्दू हर्फ़—एक नज़र में

हर्फ़ के टूटे आकार	हर्फ़ की आवाज़		हर्फ़ का नाम	
سـ	/s/	स	सीन	س
شـ	/Š/	श	शीन	ش
صـ	/s/	स	स्वाद	ص
ضـ	/Z/	ज़	ज़्वाद	ض
طـ	/t/	त	तोय	ط
ظـ	/Z/	ज़	ज़ोय	ظ
ع ـعـ عـ	/e/	ए	एन	ع
غ ـغـ غـ	/g/	ग	ग़ैन	غ
فـ	/f/	फ़	फ़े	ف
قـ	/q/	क़	क़ाफ़	ق
ـکـ کـ	/K/	क	काफ़	ک
ـگـ گـ	/g/	ग	गाफ़	گ
لـ	/L/	ल	लाम	ل
مـ	/m/	म	मीम	م
ـن نـ	/n/	न	नून	ن
ـو	/v/	व	वाव	و
ـہ ـہـ ہـ	/h/	ह	छोटी हे	ہ
ـی ـیـ یـ	/y/	य ई	ये	ی
ـے ـیـ یـ		ऐ	बड़ ये	ے

सांकेतिक चिन्ह का अभ्यास

अक्षरों के अलावा उर्दू में कुछ संकेति चिन्ह इस्तेमाल किये जाते है। जो उच्चारण की दिशा बताते है।

1. मद यह [ٓ] निशान आलिफ़ पर लगाया जाता जब शुरू में आलिफ़ से [(आ)] उच्चारण लिखाना हो जैसे –

آپ   آج   آگ   آس   آن

2. ज़बर [َ] यह निशान ज़बर कहलाता है और हर्फ़ के उपर लगाया जाता है। और (अ) की आवाज देता है। यहां यह बात याद रखनी चाहिये कि हिन्दी के हर अक्षर में (अ) स्वर छुपा होता है। उर्दू में ऐसा नहीं है। अंग्रेजी की तरह उर्दू में भी हर Consonant के बाद Vowel लगाना होता है जैसे अब के लिये आलिफ़ ज़बर اَب और रब के लिये ر पर ज़बर लगाना होता है।

دَس   دَل   رَس   زَن   وَر   دَر

3. पेश [ُ] यह निशान पेश कहलाता है और अक्षर के ऊपर लगता है – उ स्वर को लिखता है।

اُڑ   دُم   رُت

4. जेर [ِ] यह निशान ज़ेर है और अक्षर के नीचे लगाकर (इ) स्वर लिखा जाता है।

اِک   دِل   اِن   دِن

5. तशदीद [ّ] यह तशदीद है अक्षर के ऊपर लगता है इसका इस्तेमाल वहाँ करते हैं जहां एक हर्फ़ को दो बार पढ़ना होता है और उसे एक बार ही लिखा जाता है और उस पर तशदीद लगाते हैं। जैसे –

رَدّی   دَرّہ   ذَرّہ   اَڈّا

6. जज़्म [ْ] यह निशान जज़्म कहलाता है और वहाँ लगाया जाता है जब उच्चारण में दो Consonants के बीच में कोई Vowel नहीं होता जैसे – وَرْد

7. उल्टा पेश [ٗ] उल्टा पेश का यह निशान केवल و अक्षर पर लगाया जाता है। जब ऊ की आवाज देने के लिय लिखा जाता है। जैसे –

اوٗن   دوٗر   روٗپ

8. खड़ा ज़बर [ٰ] यह निशान हर्फ़ के ऊपर होता है और आ की आवाज़ देता है ज़्यादा तर अरबी के शब्दों में इसका इस्तेमाल देखने को मिलता है जैसे–

لٰہذا   اسمٰعیل   رحمٰن   زکوٰۃ   صلوٰۃ

अरबी के ही शब्दों में ی या ے पर भी यह निशान लगाते हैं तो यह आलिफ मक़सूरा होता है। और इस सुर में ی ے का अस्तित्व खत्म हो जाता है। यानी ی ے दोनों उच्चारण में नहीं आते। जैसे موسیٰ لیلیٰ عیسیٰ مولیٰ

इन हर्फों को पहचानियें
और इनका नाम हिन्दी में लिखिये –

ص ق ف ط ض غ ذ

م د ڑ گ ن ر خ

پ ک ل ج ع ا ث

ب ش و ذ ڈ ہ ل

ی ہ ے ز ظ ا ٹ

नन कनेक्टर्स

नन कनेक्टर्स में 9 हर्फ़ आते हैं। आलिफ़ की बात हम कर चुके। अब आठ हर्फ़ और हैं जिनका ज़िक्र होगा।

इन हर्फ़ों में दाल ग्रुप की तीन और रे ग्रुप के चार हर्फ़ के अलावा एक बाब शामिल है।

किसी हर्फ़ के जोड़ने पर		लिखने को मश्क़	आवाज	नाम	हर्फ़
د	ب + د = بد ج + د = جد	د د د	/d/	दाल	د
ڈ	ٹ + ڈ = ٹڈ پ + ڈ = پڈ	ڈ ڈ ڈ	/ḍ/	डाल	ڈ
ذ	ج + ذ = جذ	ذ ذ ذ	/z/	ज़ाल	ذ
ر	پ + ر = پر چ + ر = چر	ر ر ر	/r/	रे	ر
ڑ	پ + ڑ = پڑ ج + ڑ = جڑ	ڑ ڑ ڑ	/ṛ/	ड़े	ڑ
ز	بُ + ز = بُز	ز ز ز	/Z/	ज़े	ز
ژ	پ + ژ = پژ	ژ ژ ژ	/z/	ज़े	ژ
و	ج + و = جو ت + و = تو چ + و = چو	و و و	/v/	वाव	و

सबक़ बे ग्रुप
हर्फ़ लिखने की मश्क़

यह पांच हर्फ़ एक ही आकार के है इसलिये इन्हें एक ग्रुप या वर्ग के अक्षर कहते हैं। यह सब दाईं से बाईं की ओर लिखे जाते हैं। इनके बीच अंतर को बिन्दी या नुक़्तों से बताया जाता है। एक हर्फ़ पर छोटा सा ط निशान होता है।

जुड़ने पर आकार	लिखने की मश्क़	आवाज	नाम	हर्फ़
ـب ـبـ بـ ب	ببب ببب ببب	/b/	बे	ب
ـپ ـپـ پـ پ	پپپ پپپ پپپ	/p/	पे	پ
ـت ـتـ تـ ت	تتت تتت تتت	/t/	ते	ت
ـٹ ـٹـ ٹـ ٹ	ٹٹٹ ٹٹٹ ٹٹٹ	/ṭ/	टे	ٹ
ـث ـثـ ثـ ث	ثثث ثثث ثثث	/s/	से	ث

चूंकि हर्फ़ों का मूल आकार एक है इसलिये नुक़्तों या बिंदियों के प्रति सतर्क रहना ज़रूरी है वरना पे की जगह से और टे की जगह ते लिखने की गलती हो सकती है। ऊपर के पांच हर्फ़ों में एक टे के लिये अलग निशान है बाक़ी सबको नुक़्तों से पहचाना जायेगा।

मश्क़—2

1. ग्रुप ب के हर्फ़ों को लिखये।

2. बे ग्रूप के हर्फ़ों के टूटे आकार बनाइये

3. इन आकारों में क्रम से नुक़्ते लगाकर हर्फ़ों का नाम दीजिये।

ٮ	ٮ	ٮ	ٮ
बे	से	पे	टे
ٮ	ٮ	ٮ	ٮ
ते	बे	टे	बे

टूटे आकार

1	ب	پ	ت	ٹ	ث
2	بـ	پـ	تـ	ٹـ	ثـ
3	ـبـ	ـپـ	ـتـ	ـٹـ	ـثـ

लिखने की मश्क़ करें।

ت ٹ ب پ ث ت ٹ ب

ٹـ ثـ پـ بـ تـ ثـ ٹـ پـ

ـٹـ ـثـ ـبـ ـپـ ـٹـ ـتـ ـپـ

सबक़

तीन हर्फ़ और है जो अपने टूटे आकार के आधार पर ب ग्रुप के हर्फ़ों से मिलते हैं यह

नून ن
ये ی
बड़ी ये ے

Broken Shapes

ے	ی	ن
یـ	یـ	نـ
ـیـ	ـیـ	ـنـ
ـیـ	ـیـ	ـنـ

जब ی लफ़्ज़ के बीच में हो और (ई) की आवाज के लिये लिखी जाये तो इसके Broken Shapes के नीचे एक निशान ׀ लगाते है।

ईसार ایثار — یـ   दीवाना دیوانہ — یـ
बीमार بیمار — یـ   नीम نیم — یـ

मश्क–3

इन को ज़बर ज़ेर पेश और मद के साथ लिखिये और इन का उच्चारण हिन्दी में लिखिए –

رَ + ب

دَ + س

دَ + ر

ڈَ + گ

زَ + ر

رَ + گ

دِ + ل

پِ + ت

نِ + ب

اِ + ن

رُ + ت

پُ + ن

آ + پ

آ + س

آ + گ

آ + ن

اَ + د + رَ + ک

آ + دَ + م

بُ + ت

ٹَ + ب

نَ + ل

بَ + رَ + س

دَ + و + ا

آ + و + ر

آ + ر + ی

آ + ڑ + ی

آ + ڑ + ا + ن

د + ر + ا + ز

ڈ + ا + ک

जीम ग्रुप के हर्फ़

यह चारों हर्फ़ जुड़ने वाले हर्फ़ है और Connectors कहलाते हैं। दूसरे हर्फ़ से जुड़ते समय यह अपना आधे से ज़्यादा हिस्सा त्याग देते हैं और टूटे आकार के साथ दूसरे हर्फ़ में जुड़ते हैं।

हर्फ़ों को लिखने की मश्क

जुड़ने पर	लिखने की मश्क़	आवाज़	हर्फ़ का नाम
جـ	ج	ज	जीम
چـ	چ	च	चे
حـ	ح	ह	हे
خـ	خ	ख़	ख़े

जब	جَب	जात	جات
चुप	چُپ	चार	چار
हद	حد	हाल	حال
ख़र	خر	ख़ार	خار

इन को जोड़कर लिखिये

ج + ج

ح + ج

خ + ر

چ + ر

ح + ا

ح + چ

ح + ا + ج

ج + ا + پ

ح + ا + ل

چ + ا + ر

ج + ب

چ + پ

چ + ا + پ

ب + ی + ج

ت + ا + ج

ج + ا + ت

ت + ا + خ

خ + ا + پ

خ + ر + ا + ب

ج + ر + ا + ب

ت + ب + ا + ج

वाव و

यह उर्दू का 33 वां हर्फ़ और (व) आवाज. को लिखता है जैसे वर, वरदान, वारिस, सवार, तवा, दवा, जलवा, तलवार। व लिखने के अलावा و तीन स्वरों को भी लिखता है

و

ऊ وٗ	औ وٓ	ओ و
اوٗن روٗپ	اوٓر دوٓڑ	دو دو
دوٗب دوٗج	پوٓد زوٓج	دُور ڈور
		روز توڑ

यह एक Non Connector है जो किसी दूसरे हर्फ़ से नहीं जुड़ता है।

سو सो تو तो او ओ

रोज़ روز रोग روگ जो جو रो رو दो دو दो دو

दौड़ دوڑ औज اوج ग़ौर غوٓر दौर دور और اور — औ او

रूस روٗس दूब دوٗب रूप روٗپ ऊब اوٗب — ऊ اوٗ

इन लफ़्ज़ों को उर्दू में लिखिये

तौर दूर जून ऊन डोर ढ़ोल बौर जोल
घोर गोल मोल पोल खोर चूल जूस चोर
ख़ोल रोज़ रोग डोम चूम खून खूब चूस
बार रिवाज वरदान रवा

सबक़
छोटे स्वर

تَپ	تَب	دَب	اَب	رَب	اَ
तप	तब	दब	अब	रब	अ
رِس	دِل	نِب	دِن	اِس	اِ
रिस	दिल	निब	दिन	इस (ि)	इ
بُن	بُت	دُم	رُت	اُڑ	اُ
बुन	बुत	दुम	रूत	उड़ (ु)	उ

नीचे लिखे शब्दों को जोड़ कर लिखिये और हिन्दी में इनका उच्चारण बताइये –

بس - تٹ - ر - بن - حد - چن

تل - بل - نر - جج - حج - چت

بد - دب - خر - چر - ٹر - نر

دل - رد - زر - ٹچ - ٹب

راگ - ناگ - چار - خال - جاپ - پار

بات - پات - ٹال - ناد - تال - پان

پاپا - نانا - چاچا - ٹاٹا - جاڑا

دارا - باجا - راجا - چارا

सबक़
बडे स्वर

(I) ई

چیل	جیت	پیٹ	ریت = ری ت		
चील	जीत	पीट	रीत		
دید	ریل	چیز	نیر	تیر	چیخ
दीद	रीत	चीज़	नीर	तीर	चीख़
دیدی	دادی	تاڑی	نانی	پاپی	حاجی
दीदी	दादी	ताड़ी	नानी	पापी	हाजी

ए (E) اے

تیل	دیر	بیل	نیک	ایک	
तेल	देर	बेल	नेक	एक	
پیڑ	نیگ	بیر	زیر	جیل	ریل
पेड़	नेग	बेर	ज़ेर	जेल	रेल

ऐ (E) اَئے

خیر	بیر	دیر	چین	رین
ख़ैर	बैर	दैर	चैन	रैन
چیر	بیل	تیر	پیر	پیک
चैर	बैल	तैर	पैर	पैक

او (ो) ओ

بور	ڈول	توڑ	جوڑ	رول	دوش
बोर	डोल	तोड़	जोड़	रोल	दोश
اوس	ڈور	چور	خول	جوگ	روگ
ओस	डोर	चोर	ख़ोल	जोग	रोग

اَو (ौ) औ

دوڑا	چوڑا	پَود	اَور
दौड़ा	चौड़ा	पौद	और
روَد	دوَڑ	دوَر	جوَر
रौद	दौड़	दौर	जौर

اُو (ू) ऊ

اُود	ڈُوب	جُون	دُور
ऊद	डूब	जून	दूर
پُوت	رُوپ	خُون	چُور
पूत	रूप	ख़ून	चूर

آ (ा) आ

آپ - آگ - پار - چار

وارد - جان - رات - بات

اب - بات - پال - جان

چارا - پارا - ارا - ڈورا

پُودا - دوا - ردا - جانا - آنا

आ

आ लिखने के लिये शुरू में अलिफ़ को मद का सहारा लेना पड़ता है। लेकिन शब्द के बीच और आख़िर में अलिफ़ अकेला ही **आ** को उच्चारण देने के लिये काफ़ी है।

जैसे – आम آم

दादा دادا	दाग داغ	आज آج
आवा آوا	राम رام	आब آب
दारा دارا	रात رات	आन آن
ज़रा ذرا	दास داس	आस آس
दवा دوا	दाल دال	आग آگ

इन शब्दों को हिन्दी में लिखिये –

آرام - آواز - آزار - آزاد - آداب

اَذان - اُڑان

دَوات - دراز - دَوام - زری - روزی - درزی

नीम मुस्व्वता
Semi vowel

दो हर्फ़ उर्दू में अर्ध स्वर या Semi vowel है। जब [ی] य की उच्चारण करती है तो वहां इसे Semi Vowel कहा जाता है। लफ़्ज़ के शुरू और मध्य में [ی] किसी vowel को लेकर चलती है तो य आवाज़ को लिखती है जैसे –

یاد - یار - یقین - یتیم

ریاض - پیار - پیاس - سیانا - دِیا - بَیا

लफ़्ज़ के आख़िर में [ی] हमेशा ी (ई) को लिखती है।

व [و] भी Semi vowel के नाम से है और लफ़्ज़ के शुरू, बीच में और आख़िर में तीनों जगहों पर यह व उच्चारण लिखता है।

जैसे – वार وار

आख़िर में	बीच में	शुरू में
महव محو	दवात دوات	वज़न وزن
नहव نحو	दवा دوا	वारिस وارث
लग़व لغو	रिवाज رِواج	वालिद والد
	सवार سوار	वरदान وردان
	दीवार دیوار	वज़ीर وزیر
	तस्वीर تصویر	

मश्क़—4

ر ڑ ز ژ

						रब	رب
ज़ियाँ	ژیاں	ज़बान	زبان			रुत	رُت
गहरा	ژرف	दर्जी	درزی	आड़ू	آڑو	रिवाज	رِواج
बर्फ़	ژالہ	ज़री	زری	आड़ा	آڑا	रद	رَد
अजगर	اژدہا	ज़रा	زرا	उड़ान	اُڑان	दर	در
आंख की	مژگان	ज़ोर	زور	ताड़	تاڑ	दराज़	دراز

د ڈ ذ

अज़ान	اَذان	डर	ڈر	दर्ज़ी	درزی
दाद	داد	डोर	ڈور	दराज़	دراز
दवात	دوات	रोड	روڈ	दवा	دوا
				वर्दी	وردی

मश्क़–5

इन लफ़्ज़ों को उर्दू में लिखिए –

आप	आज	आस	आग	आ
रात	जात	पार	नाच	जार
दर	रच	वर	तप	जप
रूत	बुत	तब	दुम	राज
आवाज़	दवा	आदा	उड़ान	
वरदान	दरवाज़ा	आवारा	इस	दिन
दिल	दल	टब	रब	चित
जब	निब	बस	रस	ख़स
दब	ख़ास	ख़ाल	ख़ार	जाप
नाप	पान	नाक	नान	जान
रात	रान	दाब	रात	चाल
जाल	राल	डाल	डाब	राज़
वार	तार	तान	बार	बात
वज़न				

एक – अनेक

उर्दू में एक ही उच्चारण के लिये एक से ज़्यादा हर्फ़ की भी परम्परा है। यह आवाज़ें हैं –

/Z/ /S/ /t/ /h/

1. **/Z/** यानी **ज़** के उच्चारण को चार अक्षर लिखे जा सकते हैं लेकिन लफ़्ज़ में जिसको लिखना है वही

   (a) ذ
   (b) ز
   (c) ض
   (d) ظ

2. **/S/** यानी **स** उच्चारण को तीन हर्फ़ लिखते हैं

   (a) ث
   (b) س
   (c) ص

3. **/t/** यानी **त** आवाज़ को दो अक्षर उच्चारण देते हैं

   (a) ت
   (b) ط

4. **/h/** यानी **ह** आवाज़ देने वाले हर्फ़ उर्दू में दो हैं

   (a) ح
   (b) ہ

मश्क़—6

एक आवाज़ के लिये अनेक हर्फ़ होने की वजह से उर्दू में भी अंग्रेज़ी की तरह Spelling का महत्व बढ़ जाता है। इसमें भी लफ़्ज़ का इमला ज़रूर ध्यान से पढ़ना और लिखना चाहिए। वरना गलतियाँ बहुत होती रहेगी।

सही	गलत
ت رازو	ط رازو
غ ل ط	غ ل ت
ص ن دوق	س ن دوق
عِ ل اج	اِ ل اج
زردُوزی	ض ردوزی
ظ ل م	ضُ ل م
ذِ ک ر	زِ ک ر
اِ ن ع ام	اِ ن ام
ح ل وا	ہ ل وا
ہ ک م	ح ض م
ضِ ل ع	ضِ ل ا
ع داوَت	اَداوت

लिखिये और याद कीजिये

ज़िद	ضد	ज़र	زر	ज़ात	ذات
हौज़	حوض	ज़ोर	زور	अज़ान	اَذان
अर्ज़	ارض	राज़	راز	ताश	تاش
रज़ा	رضا	आवाज़	آواز	तिब	طِب
बतख़	بطخ	रात	رات	ख़त	خط
वारिस	وارِث	ताक	طاق	ख़ता	خطا
		बात	بات		

हल	حل	नज़र	نظر
हद	حد	ज़ालिम	ظالم
हिरन	ہرن	साज़िश	سازش
हवन	ہوَن	सारस	سارس
हाल	حال	सदा	صدا
		साफ़	صاف
		साबित	ثابت

उर्दू का यह पक्ष हिन्दी से अलग हो जाता है। और इस के लिये शब्द से जानकारी होने के साथ–साथ शब्द की Spelling से भी जानकारी ज़रूरी है। वरना गलती होती रहेगी।

भिन्न आवाजें

ऐसे अक्षर जिनकी आवाजें हिन्दी भाषा में नहीं।

1.	ज़	ذ ز ض ظ
2.	ख़	خ
3.	ग़	غ
4.	फ़	ف
5.	क़	ق

यह आवाजें हिन्दी भाषा में मौजूद नहीं है।

ग़ुल	=	غ + ل	ख़ाल	=	خ + ا + ل
गुल	=	گ + ل	खाल	=	کھ + ا + ل
क़ाल	=	ق + ا + ل	फ़न	=	ف + ن
काल	=	ک + ا + ل	फन	=	پھ + ن

उच्चारण का अभ्यास करके आवाजों के अंतर को समझने की कोशिश कीजिये।

اجل	زبر
ازل	جَبَر
جلیل	قدم
ذلیل	کدم
خول	خانہ
کھول	کھانا
غوٗر	زمانہ
گوٗر	جمانا

इन शब्दों को पढ़िये

واردات - دوات - رِواج - درزی

وردی - روزی - وزن - زردہ

دؤرہ - ادرک - دراز - زردی

ارض - وِداع - اَذان - اِدراک

اِزار - ژراف - دؤری - اُڑان

رِزق - ڈؤب - ڈور - روزن

درزن - رازِق - دُوزخ

इन शब्दों को उर्दू में लिखिये –

आदाब – उड़द – औज़ार – ज़ोर – रोज़

रूप – दोश – डोल – वरदान – दूब

डोल डाल – राज़ – राज़ – बज़न – उर्दू

आरजू – आवाज़ – दारा – डाब – वारिस

वरक़ – रिवाज – आवाज़ – अरजां – अरब

अदब – आरी – रिदा – दाब – दाल – दाम

राज – राल – राम – दूज – रोश

मश्क़—7

पढिये और लिखिये

آداب - برباد - پایاب - نایاب - بارات

پؤری - چوڑی - نؤری - روزی - آڑی

باری - نادی - تازی - یاری - دادی

ارب - ادب - اِذن - اذان

پورا - توڑا - ڈورا - دؤرا

آباد - برباد - دیار - دریا

دروازہ- آوارہ - ناداری

ناراض- تاراج - جُرّاب

بَدَن - جذب - حذب - رجب

इन शब्दों को उर्दू में लिखिये —

दर्द — बदन — जज़्ब — रजब

दरया — नद्दी — ज़िद्दी

दरार — बरार — शरार — बुख़ार

ھ दो चश्मी हे

ھ उर्दू में (दो चश्मी) हे या मख़्लूत हे (ह) की आज़ाद आवाज़ नहीं देती। यह Aspirated Consonants अक्षर को लिखता है। यानी हकारी आवाज़ें इससे लिखी जाती हैं। जैसे थ ढ़ फ उर्दू में 15 आवाज़ें ऐसी है

जुड़ने वाले आकार		आवाज़	हर्फ़
بھ	بھ	/भ/	بھ
پھ	پھ	/फ/	پھ
تھ	تھ	/थ/	تھ
ٹھ	ٹھ	/ठ/	ٹھ
جھ	جھ	/झ/	جھ
چھ	چھ	/छ/	چھ
دھ	دھ	/ध/	دھ
ڈھ	ڈھ	/ढ/	ڈھ
رھ	رھ	/रह/	رھ
	ڑھ	/ढह/	ڑھ
	کھ	/ख/	کھ
	گھ	/घ/	گھ
	لھ	/ल्ह/	لھ
	مھ	/म्ह/	مھ
	نھ	/न्ह/	نھ

हिन्दी में ल्ह म्ह और न्ह को छोड़ कर बाक़ी 12 आवाज़ों के लिये एक–एक अलग–अलग अक्षर हैं लेकिन उर्दू में तमाम Aspirated Sounds के लिये इसी तौर पर अक्षर बने हैं।

हकारी हर्फ़ों को लिखिये

بھ	भ	بھار	بھول
پھ	फ	پھول	پھن
تھ	थ	تھال	تھکن
ٹھ	ठ	ٹھوک	آٹھ
جھ	झ	جھول	جھلک
چھ	छ	چھپّن	مچّھر
دھ	ध	دھوپ	آدھا
ڈھ	ढ	ڈھول	ڈھال
رھ	रह	سِرھانا	
ڑھ	ढह	کڑھا	چڑھا
کھ	ख	کھیت	مکّھن
گھ	घ	گھاس	بگھّی
لھ	ल्ह	چولھا	کولھو
مھ	म्ह	کمھار	تُمھارا
نھ	न्ह	کانھا	ننّھا

मश्क़—8

इन हर्फ़ों को जोड़कर लिखिये

ठान = ٹھان	थकन = تھکن	फान = پھان	भार = بھار
ठेठ = ٹھیٹھ	थपक = تھپک	फबन = پھبن	भूत = بھوت
ठाठ = ٹھاٹھ	थोक = تھوک	फूल = پھول	भेल = بھیل
छाछ = چھاچھ	अच्छा = اچّھا	झाल = جھال	झमक = جھمک
गाछ = گاچھ	लच्छा = لچّھا	झील = جھیل	झलक = جھلک
पूछ = پوچھ		झनक = جھنک	झूम = جھوم
पढ़ा = پڑھا	सिर्हा = سِرھا	ढाल = ڈھال	धूल = دھول
बाढ़ = باڑھ	कढ़ा = کاڑھا	ढेर = دھیر	धार = دھار
नन्हा = ننّھا	ओढ़ा = اوڑھا	ढोल = ڈھول	घनक = دھنک
तुम्हारा = تمھارا	आलहा = آلھا	घड़ा = گھڑا	खाल = کھال
कान्हा = کانھا	चूल्हा = چولھا	घोड़ा = گھوڑا	खेल = کھیت
	दूल्हा = دولھا	घेरा = گھیرا	खरब = کھرب

इन शब्दों को हिन्दी में लिखिये –

दो हर्फ़ी

اَب رَس ڈر دَس دِن

رُت دُر دُکھ دُم اُڑ

اُن رَم رن

तीन हर्फ़ी

آدم آڑو داور ڈاک روز

ذات راگ راکھ داغ دوا

زور دوا ڈور دؤر ڈول

روگ آواز ادرک اُڑان اُداس

آرام آزاد رازق وارِس وِداع

آزار اوزار آوارہ دروازہ

ّ तशदीद – याददाश्त

ّ यह निशान तशदीद है। तशदीद वहां इस्तेमाल होती है जहां एक Consonant का उच्चारण दो बार किया जाता है। हिन्दी में ऐसी हालत में एक अक्षर को दो बार लिखते हैं– एक आधा और एक पूरा। जैस – धक्का, बल्ला।

उर्दू में हर्फ़ एक बार ही लिखा जाता है और उस हर्फ पर ّ का निशान लगा दिया जाता है –

बुद्धू	بدّھو	रद्दी	ردّی
बल्ले	بلّے	ज़िद्दी	ضدّی
सत्ते	ستّے	बल्ला	بلّا
घट्टा	گھٹّا	ग़ल्ला	غلّہ
चुल्लू	چلّو	बग्घी	بگّھی
नन्हा	ننّھا	पत्थर	پتّھر
मुन्ना	منّا	पट्ठा	پٹّھا
कत्था	کتّھا	कत्था	کتّھا
गड्ढा	گڈّھا		

इनको लिखिये

वह बुद्धू लड़का धक्के खाने आया है। लट्टू नचाने का उसे शौक़ है। बिल्ली कुत्ते शहर में भरे हैं। वह उसका कच्चा चिट्ठा सब जानता है। पत्थर पर दूब नहीं जमती। कुत्ते का पट्टा दे दो। कद्दू सूखा है। राजा गद्दी पर बैठा। सच्ची सच्ची बोलो। कच्चा आम खट्टा। रद्द कपड़े गद्दे पर डाल दो। पत्ता–पत्ता पीला था। अच्छा–अच्छा बोलो। लट्ठम लट्ठा मत कर। सन्तू रसगुल्ला खा ले।

इन लफ़्ज़ों को लिखिए

काली बिल्ली। पीली तितली। नीली पत्ती। कुत्ते की आवाज़। बंदर की चीख़ सुनी आपने। केला और बेल के पत्ते ले लो। बेल ख़रीद ले। जल्दी–जल्दी रोटी चपाती बना लो। चिड़िया को आज़ादी दे दो। गाने की लै सुनो और ग़ौर करो। उल्लू पेड़ पर चूहा मेज़ पर आया। तेली तेल लाया। आज शाम दीवाल पर आना। चार मील पैदल चलना। मोती की आन उतरी। शाम को रोज़ आया करो। गद्दा गीला पत्ता हरा कुत्ता काला। लड्डू के दाम दे दो। आम तो खट्टे निकले। रोज़ी रोटी चलती है। हरी–हरी खेती देखी। थाली फेकी। खीर फीकी खानी पड़ी।

س ســ ش شــ

यह दोनों अक्षर जोड़कर लिखे जाते हैं और इनके दो आकार है और दोनों तरह से लिखे जा सकते है।

शाल	شال = ش ال	सास	ساس = س اس
शरम	شرم = ش رم	सड़ा	سڑا = س ڑا
शरबत	شربت = ش ربت	सजा	سجا = س جا
शबाब	شباب = ش باب	सच्चा	سچّا = س چا
बशर	بشر = ب ش ر	बशर	بشر = ب ش ر
पुश्त	پُشت = پُ ش ت	जस्त	جست = ج س ت
नशर	نشر = ن ش ر	नस्ल	نسل = ن س ل
बारिश	بارِش = با رِ ش	रसद	رسد = ر س د
ख़ारिश	خارِش = خا رِ ش	सारस	سارس = س ا ر س
		नारस	نارس = ن ا ر س

इन को उर्दू में लिखिये–

सच्चा सच्चा बोलो। आम का शरबत दे दो। घर को सजा कर रक्खो। शाल ओढ़ लो। बारिश तेज़ गिरी। कुत्ते को ख़ारिश लगी। चीता जस्त लगाकर आया। पुश्त पर वज़न ले लो। घोड़ा अच्छी नस्ल का है। कुछ तो शरम करो। केला सड़ाा थ। सास ने पान खाया। सारस एक चिड़िया होगी। फ़ौज को रसद दे दो। सब के सब अच्छे हैं।

جزم کے الفاظ

[ْ] जज़्म का निशान दो व्यंजनों के बीच स्वर न होने पर लगाया जाता है –

اپنا فرْض پورا کرو۔ قرْض سے بچو۔

دوسْت بنانا اچھّا۔ دشْت جلانا اچھّا۔

شیر کو گوشْت کھانا پسنْد ہے۔

کسان کاشْت کرتا ہے۔

مسْت شیر کو دیکھو۔

ایک شخْص آیا۔

وقْت کو کِس نے دیکھا۔

بلّی نے جسْت لگا کر کبوتر پکڑا۔

غریب کی عرْض سنو۔

گرْم کپڑے خریدو۔

روٹی نرْم تھی۔

تخْت سخْت تھا۔

ص ض

यह दोनों हर्फ स्वाद ص और ض ज़्वाद है। दोनों में फ़र्क सिर्फ एक बिन्दी या नुक़्ते का है। यह Connector है और जुड़ते वक़्त अपना आधे से ज़्यादा आकार त्याग देते है। صبر = صـ بـ ر

ज़िद	ضِد	=	ضـ د	साबुन	صابُن	=	صـ ا بُـ ن
ज़र्ब	ضرب	=	ضـ ر ب	साहिब	صاحِب	=	صـ ا حـ ب
हज़रत	حضرت	=	حـ ضـ ر ت	सूर	صُور	=	صـ وُ ر
हाजिर	حاضر	=	حـ ا ضـ ر	ख़ास	خاص	=	خـ ا ص
हौज़	حوض	=	حـ وْ ض	ख़ालिस	خالِص	=	خـ ا لِـ ص
अर्ज़	ارض	=	ا ر ض				

इन को उर्दू में लिखिये–

मास्टर साहिब घर चले। साबुन से सर साफ कर लो। खालिस घी का पकवान रखो। बच्चे हाज़िर थे। हौज़ में पानी भर लो। ज़िद की आदत छोड़ दो। सबर से काम लो हज़रतगंज से सामान लाना। साफ़ सुथरा घर देखा। संदूक का सामान उठा कर रख दो। पत्थर के सनम। सूरत अच्छी थी। इंसाफ़ करो। रब को राज़ी रखो। कुछ हासिल करो। हक़ वसूल करना। दोस्त को सदा दो। एक सदी, दो दसी – सौ सदी।

ظ ط

यह दोनों हर्फ़ Connectors हैं लेकिन Connectors की तरह यह दोनों जुड़ते समय न अपना आकार त्यागते है न ही ग्रुप की तरह आकार बदलते है।

बतख़	بطخ = ب ط خ	ताक़	طاق = ط ا ق
ख़तर	خطر = خ ط ر	ख़ता	خطا = خ ط ا
सतर	سطر = س ط ر	नज़र	نظر = ن ظ ر
अज़ीम	عظیم = ع ظ ی م	अता	عطا = ع ط ا
फ़ितर	فطر = ف ط ر	इतर	عطر = ع ط ر

इन को उर्दू में लिखिये

बतख़ पानी पर चली। सड़क पर ख़तरा देखो। ताक़ पर किताब रख दो। दो सतर लिखे सब पर नज़र रखो। शाल खरीद लो। वतन से प्यार सब करें। भारत अज़ीम देश और प्यारा भी। ख़िताब जीतो। ताक़ पर उल्लू बैठा। ख़ता किस की थी। इनर ख़रीद लो। बतख़ बोली। रास्ता ख़तर है। दो सतर लिख दो। फ़ितर की ईद थी। ख़ता पर नज़र रखो।

मिलाकर लिखिये और अर्थ याद कीजिये

मानी	हिन्दी	लफ़्ज़	मानी	हिन्दी	लफ़्ज़	मानी	हिन्दी	लफ़्ज़
पत्र	ख़त	خ ط	बत	बत	ب ط	ताका	ताक़	ط ا ق
खुशी	निशात	ن ش ا ط	बतख़	बतख़	ب ط خ	तरीक़ा	तौर	ط و ر
दंड	सज़ा	س ز ا	दोष	ख़ता	خ ط ا	उपचार विधि	तिब	ط ب
	रसम	ر س م	पंक्ति	सतर	س ط ر	बड़ी थाली	तशत	ط ش ط
			शरीर	बतन	ب ط ن	ओर	तरफ़	ط ر ف
			मातृभूमि	वतन	و ط ن	तरीक़ा	तौर	ط و ر

निगाह	ن ظ ر	ظ ن	समझ ख़्याल
दृश्य	ن ظ ا ر ہ	ظ ر ف	बर्तन
सम्मान	ل ح ا ظ	ظ ر و ف	बर्ततनो

तोय और ज़ोय दोनों ही Connectors है लेकिन जुड़ते वक़्त यह दोनों ही हर्फ़ न तो अपना कुछ भाग त्यागते हैं और न कुछ आकार बदलते हैं। बिलकुल भी अंतर नहीं आता

इन लफ़्ज़ों के अर्थ जानिये

شُطر سطر نظر خطاب خطا

نظارہ بطن خطرا مُضطر

وطن =

ع غ

ع اور غ की टूटी शक्लें जो बीच में और आख़िर में बनती हैं वह Initial position में बनने वाले आकार से बिलकुल अलग बनती हैं।

ـع **Final**	ـعـ **Medial**	عـ **Initial**
چراغ	بعد	علم
بالغ	بعض	عین
ضِلع	بغل	آغاض
رفع	بغاوت	عبادت
دفع	تعداد	غیرت
شایع	ضعیف	عاقل
نفع	طعام	غضب
ضایع	شغل	غُبّارہ
شمع	تعجب	غرور
قمع	چُغلی	علاج
قلع	معمار	اعلان
قطع	مُعمّہ	اَعلا
فارغ	بغداد	عِراق
مطلع	تغافل	عِزّت
مقطع		غفلت
اِطّلاع		عقل

ع

ऐन उर्दू का 24 वां अक्षर है जो Connector है और एक ओर से किसी दूसरे हर्फ़ में जुड़ने पर अपना आधा गोल भाग त्याग देता है। अलिफ़ की तरह ही इसकी अपनी कोई आवाज़ ज़बर – ज़ेर– पेश के बिना नहीं है। और अलिफ़ की तरह ही ऐन पूरे दस स्वरों का उच्चारण कर सकता है। जैसे–

लफ़्ज़ के बीच और अंत में ऐन का आकार कुछ अलग होता है जिसके बारे में पहले बताया गया।

عَ جَ ب	अ	عجب
عِ شْ رَت	इ	عِشرت
عُ سْ رَت	उ	عُسرت
عَ ا دَت	आ	عادت
عَ وْ رَت	औ	عورت
اِ عْ تَ رَاض	ए	اعتراض
عَ ےْ نَ ک	ऐ	عینک
عِ ی د	ई	عید
عُ و د	ओ	عود
عُ وْ د	ऊ	عوُد

एन एक ऐसा हर्फ़ है जो अपने से पहले हर्फ़ पर लगे लघु स्वर के उच्चारण की अवधि पढ़ा देता है। छोटे स्वर को बड़े स्वर के बराबर कर देता है जैसे –

पश्चात	बाद	بَ ع د
अंतर फ़र्क	बोद	بُ ع د
आपत्ति	एतराज़	اِ عْ تَ رَاض
विभाग	शोबा	شُ عْ ب ہ
दबाव	रोब	رُ ع ب

ف ق

यह उर्दू वर्ण माला के 25 वें और 26 वें नम्बर के हर्फ़ है। ये दोनों Connectors है और ऐसी आवाजों को लिखते हैं जो उर्दू की ख़ास आवाजें है और हिन्दी में नहीं पाई जाती है। इन आवाजों को हिन्दी में लिखने के लिये फ़ और क़ पर एक बिन्दू लगाने का प्रावधान है। उर्दू में जानकारी होने पर इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है

टूटे आकार

फ़ित्रा	فطرہ = فطره	ﻓ	ف	
क़त्रा	قطرہ = قطره	ﻗ	ق	
फ़ख़र	فخر =	فنا	فال	ف

سفر	نفر	صِفر	خفا	جفا
सफ़र	नफ़र	सिफ़र	ख़फ़ा	जफ़ा

صاف	ناف	صدف
साफ़	नाफ़	सदफ़

قاش	قدر	قصر	قضا	قسم
क़ाश	क़द्र	क़स	क़ज़ा	क़सम

رقم	بقر	لقب	نقل
रक़म	बक़र	लक़ब	नक़ल

رزق	ورق	سبق	حلق	عقل
रिज़्क़	वरक़	सबक़	हलक़	अक़ल

ک گ

यह काफ़ और गाफ़ है जो वर्ण माला में 27 वें और 28 वें नम्बर के अक्षर हैं। यह दोनों अक्षर दो प्रकार के टूटे आकार बनाते हैं।

(2)	(1)
ک___ + ا ل = کا का	گ گـ س = گس
گ___ + ا ل = کل कल	ک کـ ب = کب
	گ گـ ن = گن
	ک کـ ج = کج

पहला आकार दूसरे तमाम हर्फ़ों से जुड़ता है केवल अलिफ़ ا और ل लाम को छोड़कर ا ओर ل से ک گ का दूसरे नम्बर का आकार जुड़ेगा। यह आकार ک گ यह है :–
क़ाफ़ ک ک गाफ़ گ گ

काकुल کاکُل = کاکل का کا ا + ک
गागर گاگر = گاگر गा گا ا + گ
गागिल گاگل = گاگل कर کر ر + ک
गर گر ر + گ

इन्हें लिखिये

1. काम कर। काजल दे। कल को आना

2. गागर भर। गाजर ला। गाली काली को दे।

3. काका आया।

4. गाना गा गा कर थका।

5. बिल्ली का शिकार करो।

6. सिगार जला दो।

7. फल उगाया करो।

8. काकी का काम देखा।

9. गली गली में बच्चा देखे।

10. घर से निकलो, दुकान खोलो।

ا-ل

लाम उर्दू का 30 वां हर्फ है। यह एक Connector है और जुड़ते समय अपना पूरा घेरा वाला भाग छोड़ देता है। यह हर हालत में जुड़े होने पर एक जैसा आकार ही बनाता है।

لڈو	لڑا	لاق	لال	لالچ	لاٹ
लड्डू,	लड़ा,	लाक़,	लाल,	लालच,	लाट
ل اٹ	ف ل ک	ل گی	ل گ ا	قلع	دلدل
लाट ,	फ़लक,	लगी,	लगा,	क़िला,	दलदल
پالک	سالِک	فاصِل	حاصِل	قاتِل	باطِل
पालक,	सालिक,	फासिल,	हासिल,	कातिल,	बातिल
والد	فلک	جھلک	دلیل	غلیل	خلیل
वालिद,	फ़लक,	झलक,	दलील,	गुलेल,	ख़लील,
جلیل	ذلیل	حاصِل	قلیل	علیل	وکیل
जलील,	ज़लील,	हासिल,	क़लील,	अलील	वकील

उर्दू में लिखिये

वकील आया। पालक पका लो। लालच से बचो। कातिल भाग गया। अशोक की लाट देखा? दलदल में बच्चा गया। तारे झलके। फ़लक पर बादल थे। लड़के लड़ पड़े।

मश्क़—9

قاتل کا قتل کیا۔   لاٹ صاحب کس کا تھا۔

وکیل کو ذلیل کیا۔   سؤرج جھلک دکھا گیا۔

فلک پر تارے دیکھے۔   پالک کا ساگ دے دو۔

لال لال سپنے دیکھے۔   لال قلعہ بھی دیکھا۔

آپ کو کُچھ کھانا تھا۔   بچّہ غلیل سے شکار کرتا دیکھا۔

والد صاحب کل اچھّے تھے۔   دوا یا دُعا دو، ضرؤر دو۔

حق اور باطِل کا جھگڑا۔   لالچ بُری بلا۔

لڈّؤ کے تھال گرے۔   پیڑے بکے۔

پھول کی لالی، بلّی کالی۔   بچّے نے دے دی گالی۔

رویا دادا بولی دادی۔   لڑکی کی شادی، سادی تھی۔

م ن

यह दोनों हर्फ़ Connector है, जुड़ते है तो इसका केवल सर वाला भाग ही बाकी रहता है। इसी भाग को लेकर मीम दूसरे हर्फ़ से जुड़ता है।

مگر मगर	مکر मकर	مگن गगन	ملک मुल्क	ماش माश	مار मार
محل महल	مفر मफ़र	مسل मसल	مدد मदद		
مزاج मिज़ाज	مرضی मर्ज़ी	مزا मजा	مکان मकान		
عمل अमल	چمن चमन	خمار खुमार	عمارت इमारत		
شمع शमा	جمع जमा	ضمانت जमानत	زمین ज़मीन		
ارم इरम	قلم कलम	ظالم ज़ालिम	علم अलम	آم आम	
عظیم अज़ीम	غنیم गनीम	رحیم रहीम	یتیم यतीम		
عزم अज़्म	چلم चिलम	رقم रक़म	صنم सनम		

उर्दू में लिखिये–

नमक तेज़ मत डालो। चमन खिला खिला लगे। मुजरिम की जमानत कल करवाना। इमारत बनी खड़ी देखा। शमा जली तो जली बुझी भी तो। मेरा कलम नया आया। रकम उधार दे दो। थोड़ा दम ले लो। फिर खाना खाना। जैसी आपकी मर्जी काम करो। माश की दाल का मज़ा कुछ और लगेगा।

ه

छोटी हे उर्दू वर्णमाल का 34 वां हर्फ़ है यह Connector है और ह [h] Consonant को लिखता है। इस के टूटे आकार चार है

1.ہ यह आकार एक ओर से जुड़ने पर बनता है ہ ا ب ر د ن ک گ ل ی ے जब से जुड़ता है।

जैसे–

ہر ہٹ ہن ہک ہل ہار

2. ﮨ यह आकार भी एक ओर से जुड़ने पर बनता है, लेकिन जब ه इस हर्फ़ों से जुड़ता है।

जैसे –

ص ض ط ظ ع غ ف ق م و

ہم ہوا ہضم ہط ہغ ہع

3. ﮩ यह आकार दोनों ओर से अक्षर जुड़े होने की सूरत में बनता है जैसे –

बहन بہن = ب ہ ن

चेहरा چہرا = چ ہ ر ا

कहना کہنا = ک ہ ن ا

सेहरा سہرا = س ہ ر ا

4.ﮧ यह आकार तब बनता है जब ه शब्द के आख़िर में जुड़े–

कह کہ = ک ہ

सह سہ = س ہ

आकार अंत में जुड़ता है। और जब ہ मुख्यफ़ी के तौर पर आता है तो उसमें नीचे का शोशा नहीं लगता जैसे –

पता پ ت ہ = پتہ

गिला گِ ل ہ = گِلہ

जगा جَ گ ہ = جگہ

सिला صِ ل ہ = صِلہ

इन लफ़्जों को पढ़िये और लिखिये

پتہ نہیں۔ کھانا ہضم ہوگا۔ ہر جگہ شور ہے

ہم سے گِلہ۔ اُس کو صِلہ۔ لال قِلعہ

کیسی جگہ ہے۔ کہاں جانا ہوگا۔ ہرن بھاگ رہا ہے۔ کام کا صِلہ دو۔

ہاتھی آیا ہے۔ ہاتھ صاف کرلو۔ دو دو ہاتھ کرلو۔ ہرے ہرے پھول بھرے ہیں۔

ہرکارہ دوڑ رہا ہے۔ چڑیا اُڑ رہی تھی۔ ہُد ہُد بول رہی تھی۔ ہل کھیت کے پاس ہے۔

सबक़
ی

ی हर्फ़ उर्दू का 35 वां हर्फ़ है। बे ग्रुप की तरह इसकी भी तीन शक्लें बनती है।

1. یـ یـ یـ
2. یـ یـ یـ
3. یـ یـ یـ

ي जब Broken Shapes में लिखी जाती है तो इसके नीचे दो नुक़ते लगाते है।

ي जब किसी स्वर को लेकर चलती है तो (य) आवाज़ लिखती है। जैसे याद, योग

ی ا د = یاد

ی و گ = یوگ

ی ق ی ن = یقین

س ی ا ن = سیان

پ ی ا ز = پیاز

ی (ई) की आवाज़ लिखती है। जब इसके बाद कोई स्वर नहीं होता तो ی ई स्वर लिखती है।

آ ر ی = آزی

ر و ز ی = روزی

ج ی ج ی = جیجی

چ و ر ی = چوری

د ی د ی = دیدی

चूंकि ی के Broken Shapes ے जैसे ही हैं इसलिये दोनों में अंतर बताने के लिये ی के आकार के नीचे एसा एक चिन्ह दो नुक़्तो के बीच में लगा दिया जाता है। یٖـ ـیٖـ ـیٖ

इन लफ़्जों को उर्दू में लिखिये–

नीम, चील, चीख़ पीत, जीत, नीर, तीर,
शीर, पीत, गीत, चीन, रानी, चीनी, रोटी,
चोटी, जोड़ी, साथी, काठी, मोती, माली, चोली,
हाजी, राजी, नाली, बाली, ताली

ے यह बड़ी ये उर्दू का 36 वां हर्फ़ है। छोटी ये की तरह इसकी भी तीन Broken Shapes है।

1. یـ
2. ـیـ
3. ـی

ے दो स्वरों को लिखती है।

1. ए ` اے
2. ऐ ‶ ائے

(ऐ)	(ए)
غ ئے ر = غیر	اے ک = ایک
پ ئے ر = پیر	ن ے ک = نیک
چ ئے ن = چین	پ ی ٹ = پیٹ
ب ے ل = بیل	کھ ی ت = کھیت
ل ے = لے	ج ے ل = جیل
طے = طے	س ے ٹھ = سیٹھ
ش ے = شے	د ی وا = دیوا
ق ے = قے	س ے وا = سیوا

सबक़

पहले इन्हें जोड़कर लिखिए किस देवनागरी में इन लफ़्ज़ों को लिखिए –

بھ ی ک - ٹھ ی ک - ر ی ت - ج ی ت

م ی ر - پ ی ر - ش ی ر - کھ ی ر - ن ی م

چ ی ز - چ ی ل - پ ی ل - چھ ی ل - جھ ی ل

کھ ے ت - ن ے ک - ل ے کھ - کھ ے ل - ت ے ل

ط ے س - پ ے ر - خ ے ر - ب ے ن - چ ے ن

ع ے ش - س ے ر - ب ے ر - م ے ل - ق ے س

غ ے ر - د ے ر - س ے ر - ب ے ل -

ر ے ک - ف ے ن

सबक़

ء और ے

ये दोनों ही उर्दू वर्णमाला के सदस्यों में शामिल किये जाते हैं लेकिन दोनों के ही कार्य क्षेत्र सीमित हैं ے का जिक्र पहले हो चुका है। अब हम्ज़ा ء उर्दू में वहां इस्तेमाल होता है जहां दो vowel का उच्चारण एक साथ होता है। इस हालत में दूसरा vowel ء से लिखा जाता है। देखिये

आओ آؤ

जाओ جاؤ

खाओ کھاؤ

आई آئی

नाई نائی

गई گئی

नई نئی

आ–ए آئے

जब शब्दों में आ+ओ–अ+ओ–उ+ई–आ+ई जैसी उच्चारण अवस्था हो तो हमज़ा दूसरे vowel के लिखता है।

इन को उर्दू में लिखिये

भाग जाओ। दादी आई। चाची गई। चिड़िया नहाई। गाना गाओ। हल चलाओ। आज जाओ तो फिर आ जाओ। भाई को बुलाओ। रज़ाई की सिलाई दो। नाई बाल कटाई लेगा। नये नये बरतन लाओ। कई साल बारिश रोको। कई लाल गये तो न आये। राम जाये तो कब जाये।

न – यह – वह
وہ – یہ – نہ

हिन्दी में <u>न</u> एक अक्षर भी है और एक शब्द के लिये भी आता है। जैसे –

न जाओ

ऐसा न करो

न आना न जाना सब छोड़ दिया

इनमें <u>न</u> एक हर्फ़ नहीं एक शब्द है, उर्दू में इसको लिखने के लिये दो हर्फ़ लिये जाते है।

ن + ہ

चूंकि दोनों ही Connectors है इसलिये जोड़े जाने पर इनकी शक्ल نہ बनती है।

نہ کرو نہ سوچو نہ دو خانہ

इसी तरह <u>यह</u> शब्द उर्दू में लिखने वाले दोनों हर्फ़ Connectors है। दोनों के टूटे आकार लिखे जाते है। ی + ہ = یہ और उर्दू में इस शब्द का उच्चारण ये होता है यह नहीं होता।

वह

वह हिन्दी की तरह उर्दू में भी लिखा जाता है। लिखने के लिये उर्दू में भी दो हर्फ़ लिखे जाते है و और ہ चूंकि वाव non connector है इसलिये ہ में नहीं जुड़ता और وہ लिखा जाता है। पर इसका उच्चारण (वह) नही (वो) होता है

वो चिड़िया وہ چڑیا

वो आदमी وہ آدمی

वो दिन وہ دن

वो लोग इतने बुरे भी कब लगे

वो औरत मदद चाहती थी

सबक़

(की कि)

इन दोनों शब्दों का अंतर तो आप को पता है। उर्दू में भी इनके लिखने में अंतर है

की   ک + ی = کی

कि   ک + ہ = کہ

इन वाक्यों को उर्दू में लिखिये–

आपकी बच्ची सोचती है कि कल वह नानी के घर चली जायेगी।

तितलियों से कोई पूछे कि वह चमन की दीवानी क्यों है?

कौन जानता है कि कल की बंद मुट्ठी में किसके लिये क्या है?

देखना तक़रीर की लज़्ज़त कि जो उसने कहा।

मैंने यह जाना कि गोया यह भी मेरे दिल में है।

हमने चाहा था कि मर जायँ सो वह भी न हुआ।

क़िस्मत किया हर चीज को क़स्साम–ए–अज़ल ने जो शख़्स कि जिस चीज़ के क़ाबिल नज़र आया बुलबुल को दिया नाला तो परवाने को जलना ग़म हमको दिया सब से जो मुश्किल नज़र आया।

नून गुन्ना

जब नून का उच्चारण स्वतंत्र रूप से नही होता बल्कि किसी vowel को नाक की आवाज़ की सहायता से उच्चारण देने के लिये लिखा या बोला जाता है तो इसे नून गुन्ना कहते हैं। जैसे –

माँ जहाँ यहाँ वहाँ वगैरा

नून गुन्ना बिना नुक़्ते के लिखा जाता है

ماں وہاں جہاں یہاں جاں

लेकिन जब नून गुन्ना शब्द के बीच में अपने टूटे आकार में लिखा जाता है तो इसमें नुक़ता लगाया जाता है क्योंकि नून का टूटा आकार दूसरे कई हर्फ़ों के आकार से मिलता है इसलिये पहचान के लिये नून के टूटे आकार पर नुक़ते की ज़रूरत होती है। जैसे–

फांक پھانک   रंग رنگ

आंत آنت   अंत انت

झांक جھانک   ढंग ڈھنگ

मांग مانگ

नून गुन्ना जब टूटे आकार में लिखा जाता है। तो नुक़ते के साथ इस पर एक और निशान लगाते है ^ उल्टे जज़्म जैसा यह निशान नून गुन्ना पर लगाया जाता है।

بانگ ٹانگ جانچ کانچ

ڈانٹ تونڈ مونگ چھینک

ڈینگ چونچ

नून गुन्ना

नून जब स्पष्ट रूप से उच्चारण न देकर स्वरों को Nasalization देता है। तो इस सूरत में लिखे जाने वाले को नून गुन्ना कहते है। पूरे आकार में लिखे जाने पर नून पर नुक़्ता नहीं लगता। टूटे आकार Broken Shapes में लिखे जाने पर नुक़्ता लगता है लेकिन नुक़्ते के साथ एक संकेतिक चिंह उल्टा जज़्म जैसा लगता है ।

आंगन	آنگن	ईंट	اینٹ
आंधी	آندھی	ईंधन	ایندھن
आँसू	آنسو	सींचा	سینچا
आंच	آنچ	भींचा	بھینچا
बांस	بانس	कहीं	کہیں
पांच	پانچ	हसीं	حسیں
कांच	کانچ	जमीं	زمیں
औंधा	اوندھا	जबीं	جبیں
औंटना	اونٹنا	आंख	آنکھ
सौंपना	سونپنا	आंत	آنت
अंगरखा	انگرکھا	दांत	دانت
रंगून	رنگون	फेंक	پھینک
मजनूं	مجنوں	छींक	چھینک

नून गुन्ना के शब्द लिखिये–

جھانگ - بھانگ - پھانس - ٹانک - جانگھ - سانچھ

اینٹ - چھینک - سینگ - ہینگ - مونگ -

چونچ - آنچ - کانچ - مانج - چاند - ماند

آنت - کانٹا - چانٹا

उर्दू में नून गुन्ना वाले बीस शब्द लिये

آپ کہیں - سب سنیں - بولیں تو سچ بولیں

آیئے کہیں چلیں - کھانا پکائیں اور کھائیں - آئیں اور جائیں

سمجھیں پوچھیں اور پڑھیں - پھلیں پھولیں - اچھلیں کودیں

کہانیاں سنیں - یہاں وہاں - جہاں تہاں - چاروں طرف

حسیں سماں

इन लफ़्ज़ो को लिखिये और पढ़िये–

میں آؤں گا۔ پھر اونٹ پر بیٹھوں گا

آپ آئیں گے۔ گھر میں رنگ بھرے ہیں

وہ لوگ جائیں گے،

آپ کچھ لیں گے؟ آم کے پھانک ہیں

کہاں جانا چاہیں گے

اپنا حق مانگیے، حق مونگ کی دال نہیں

وہ لوگ آنا چاہیں گے تو آجائیں گے

آپ کیا بازار چلیں گے۔ بلّی کے گلے میں اونٹ بندھا ہے

جہاں رُکنا ہے وہاں رُک جائیں گے

وہ کہتا ہے میں آؤں گا

گھر میں کہیں جگہ نہیں ہے

میں کھاؤں یا نہ کھاؤں پہلے کیوں بتاؤں؟

वाव मादूला

वाव ऐसा हर्फ है जो कुछ लफ्जों में लिखा तो जाता है लेकिन उच्चारण में नहीं आता ऐसे इस्तेमाल होने वाले वाव को वाव मादूला कहते है। ज्यादा तर यह वाव के सम्पर्क में आने की सूरत में ही देखा जाता है
जैस –

खुश	خُوش	=	خ و ش
खुद	خود	=	خُ و د
ख़ाब	خواب	=	خ و ا ب
ख़ाहिश	خواہش	=	خ و ا ہ ش
ख़ार	خ وار	=	خ و ا ر
ख़ाह	خواہ	=	خ و ا ہ
तनख़ाह	تنخواہ	=	ت ن خ و ا ہ
दरख़ास्त	درخواست	=	د ر خ و ا س ت
ख़ान	خوان	=	خ و ا ن
ख़ाह म खाह	خوامخواہ	=	خ و ا ہ م خ و ا ہ

इन लफ़्ज़ों को उर्दू में लिखिये–

ख़ुशी–ख़ुशी सारे काम करो।

तनख़्वाह अब तक – कब तक मिलेगी।

अपनी ख्वाहिश कहो।

आज क्या ख्वाब देखा।

ख़ुद अपने काम करो।

छुट्टी की दरख़्वास्त दो।

ख़ामख़्वाह की ज़िद करते हो।

बच्चा ख़ुश हैं।

ख़्वार होने से बचो।

वाव अत्फ़

जब वाव و दो लफ़्ज़ों के बीच में आता है और इनके दरमियान सम्बंध बताता है उसे 'वाव अत्फ़' कहते हैं।

जोड़ कर नहीं लिखा जाता लेकिन पढ़ने में मिलाकर पढ़ा जाता है जैसे –

जमीनो आसमान	زمیں و آسمان
सुबहो शाम	صبح و شام
मालो दौलत	مال و دولت
खैरो ख़बर	خیر و خبر
दिलोजान	دل و جان
शानो शौकत	شان و شوکت
दीनो दुनिया	دین و دنیا

इन लफ़्ज़ो को

زمینوآسمان	صُبحوشام	مالودولت
دلوجان	شانوشوکت	دینودنیا

लिखना गलत है। वाव अत्फ़ दर अस्ल और اور की जगह पर इस्तेमाल होता है

मुख़्तफ़ी

जब छोटी ہ हे शब्द के आखिर में आता है और अपनी आवाज़ छुपाकर आ की आवाज़ देता है तो इसे मुख़्तफ़ी कहते हैं मुख़्तफ़ी Consonant के बाद आता है।

न	ن + ہ = نہ
यह	ی + ہ = یہ
पर	پ ہ = پہ
खाना	خ ا ن ہ = خانہ
दाना	د ا ن ہ = دانہ
पर्दा	پ ر د ہ = پردہ
दीवाना	د ی و ا ن ہ = دیوانہ
परवाना	پ ر و ا ن ہ = پروانہ
नज़राना	ن ذ ر ا ن ہ = نذرانہ
ख़राबा	خ ر ا ب ہ = خرابہ
तराना	ت ر ا ن ہ = ترانہ

जब शब्द के आखिर में ह की आवाज़ देता है तो इसे मलफूजी कहते है जैसे –

कह	ک ہ
शाह	ش ا ہ
निबाह	نِ ب ا ہ
गुनाह	گ ن ا ہ
तबाह	ت ب ا ہ

मलफूजी हमेशा vowel के बाद उच्चारण में आता है।

तनवीन

तनवीन उर्दू लिपि में इस्तेमाल होने वाले उस तरीक़े का नाम है जिसके जरिये कुछ लफ़्जों पर दो ज़बर का निशान लगाकर उसका उच्चारण न का करते है यानी तनवीन उस तरीके का नाम है जिसमें ن लिखा नहीं जाता लेकिन उच्चारण में आता है जैसे – مجبوراً عادتاً اتفاقاً

जो रोजाना की बोल–चाल में भी आते है अरबी ज़बान में तनबीन की बहुत मज़बूत परम्परा है अरबी भाषा में ज़बर की तनवीन ज़ेर की तनवीन और पेश ُ की तनवीन तीनों की ही मिसालें हैं। लेकिन उर्दू में केवल ज़बर की तनवीन ही बहुत इस्तेमाल में है।

तनवीन का तरीका यह है कि जो लफ़्ज़ Consonant पर ख़त्म होता है इस लफ़्ज़ में ا अलिफ़ को बढ़ाकर उस पर اً लगाते है। जैसे –

رسماً رسم دستوراً دستور

مجبوراً مجبور رواجاً رواج

लंकिन ऐसे लफ़्ज़ों पर जो (हे मुख़तफ़ी) पर ख़त्म होते हैं, तनवीन लगाने का तरीक़ा यह है कि पहले हे मुख़्तफ़ी पर दो नुक़ते लगाकर फिर इस पर दो ज़बर लगाते हैं। जैसे– ارادہ से ارادۃً, तोहफ़ा تحفہ से تحفۃً, इशारा اشارہ से اشارۃً वग़ैरा

नीचे लिखे लफ़्जो में तनवीन लगाइये

مجبور رواج اخلاق انداز اتفاق

شرارت عادت ضرورت محبت قیمت

मश्क़—10

इन लफ़्ज़ों को उर्दू में लिखिये—

मजबूरन आना पड़ा।

इत्तेफ़ाक़न उस को देखा।

वह आदतन झूट बोलता है।

बच्चे ने शरारतन गेंद फेंकी।

शादी में अंदाज़न कितना खर्च है।

रोटी क़ीमतन सबको दी गई।

उस को इशारतन रोका गया।

यह फल तुहफ़तन तुम को दिया।

बच्चे ने शरारत की, तो इरादनत पीटा गया।

ख़बर आनन फ़ानन फैली।

उस को जबरन पकड़ा गया।

यह क़ानूनन जुर्म होगा।

इन शब्दों में तनवीन लगाइये

انتقام - انجام - الزام - احترام

فطرت - قدرت - اصول - عمل

इन लफ़्ज़ो को उर्दू में लिखिये और तनवीन लगाइये

तोहफ़ा इशारा बहाना अन्दाजा

दफ़अतन निस्बतन वाक़्यतन

नीचे लिखे जुम्लों में तनवीन वाले लफ़्ज भरिये।

۱- آج.............................رام سے ملاقات ہوگئی۔

۲- میں نے............................پڑھائی چھوڑ دی۔

۳- مکان بیچ کر..........................کتنا حاصل ہوگا؟

۴- ....وہ شریف ہے۔

۵- اُسے..........................روکا گیا۔

۶- ....وہ گر پڑا۔

۷- بڑا لڑکا..........................تیز ہے۔

۸- اُس نے بہن کو......................گھر دیا۔

۹- وہ.....................کام کرتا ہے۔

۱۰- بچّہ.................شرارت کرتا ہے۔

इज़ाफत

इज़ाफ़त उर्दू लिपि में अपनाये गये एक तरीके का नाम है जिसमें एक निशान लिखकर एक लफ़्ज़ का काम लिया जाता है। इज़ाफत जबान को ज्यादा आकर्षक और खूबसूरत बनाने के लिये अपनाया जाने वाला एक तरीका है जो उर्दू में मौजूद है।

شامِ اودھ　　دلِ بے تاب　　دردِ سر　شیرِ پنجاب

آزادیِ مُلک　　بربادیِ چمن　　تاریکِ شب

ऐसे ही अलफाज़ है। जिनमें एक जेर से शब्द　का मतलब निकलता है। जैसे –

چمن کی بربادی　　ملک کی آزادی　　سر کا درد　اودھ کی شام

شب کی تاریکی　　پنجاب کا شیر　　دل کی آواز

انسان کی حیات　　دنیا کی دولت　　دوست کا خیال

इजाफत का इस्तेमाल करके ज्यादा आकर्षक बनाया जाता है।

अज़ाफ़ तीन तरह से लगाई जाती है।

1. ज़ेर की इज़ाफत

بنارس کی صبح　　لکھنؤ کی شان　　وغیرہ الفاظ

जब लफ़्ज़ Consonant पर खत्म हो तब ज़ेर की अजाफत लगाई जाती है जैसे –

इन लफ़्ज़ों में ज़ेर की इज़ाफत लगाई जा रही है।

شامِ غم　　دلِ ناداں　　شورِ دریا　　قیامتِ صغرا

آوازِ بلبل　　جانِ غزل　　علاجِ مرض　　نورِ فلک

2. **इज़ाफते हम्ज़ा –**

जब लफ़्ज़ मुख्तफ़ी हे ہ पर ख़त्म होता हो तो भी हम्ज़ा की इज़ाफत लगाई जाती है।

ستارۂ قسمت   بندۂ خدا   قصّۂ لیلیٰ   کرشمۂ قدرت

نظارۂ فطرت   جلوۂ محبوب   نعرۂ آزادی

3. **इज़ाफ़ते महमूज़ ये ے**

जब कोई लफ़्ज़ आ अलिफ पर खत्म होता हो या ऊ vowel पर खत्म होता है तो बड़ी ये ے पर हमज़ा ء रखकर इज़ाफ़त लगाते है।

خوش بوئے گلاب   خدائے زمین   سزائے موت

آرزوئے زندگی   رضائے خدا   آبروئے وطن

इनमें इज़ाफ़त लगाइये। उर्दू में लिखिए–

किताबे दिल – परवाना–ए–मुहब्बत , वजहे मौत

हिम्मते मरदाना – रुस्वाए ज़माना, तोहफ़ा–ए–दोस्त,

तखता–ए–मश्क़

ال

इजाफ़त लगाने के लिये एक तरीका ال की इज़ाफ़त है। दो लफ़्जों के बीच में लगाते है। इन तरीक़े में कहीं ا अलिफ़ और ل दोनों ही उच्चारण में नहीं आते और कहीं केवल ا ही उच्चारण से बाहर होता है।

जब पहले लफ़्ज़ शम्सी हर्फ़ पर ख़त्म होता है तो दोनों ही उच्चारण में नहीं आते जैसे –

شمس+ال+دین = شمس الدین

عبد+ال+رحمان = عبدُ الرّحمان

ار+ال+سلطنت = دارُالسّلطنت

عوام+ال+دیار = غریب الدّیار

فارغ+ال+دنیا = فارغ الدنیا

इन सभी लफ़्जों में ال दोनों ही की अवाज़ें उच्चारण में नहीं आती।

उर्दू वर्णमाला के यह हर्फ शमसी حروفِ شمسی के तहत आते है।

ت ث د ذ ر ز س ش ص ض ط ظ ل ن

इन हर्फ़ों से पहले अगर ال आता है तो इन दोनों का उच्चारण नहीं होता, यह सारी Alveolar और Platal आवाज़ें हैं जिन से पहले ل की आवाज़ उच्चारण में नहीं आ पाती है।

जब दूसरा लफ़्ज़ क़मरी حروفِ قمری से शुरू होता है तो इस सूरत में حروفِ قمری का उच्चारण किया जाता है। حروفِ قمری यह हैं—

ا	ب	ج	ح	خ	ع	غ
ف	ق	ک	م	و	ہ	ی

حُب + ال + وطن = حُب الوطن

فی + ال + حال = فی الحال

فارغِ + ال + بال = فارغُ البال

ملک + ال + موت = ملکُ الموت

ناقِص + ال + عقل = ناقص العقل

یوم + ال + قیامت = یوم القیامت

اشرف + ال + مخلوقات = اشرف المخلوقات

इन सारे लफ़्ज़ों में ل का उच्चारण होता है ا का नहीं

इज़ाफ़त की क़िस्में

मानी के एतबार से इज़ाफ़त दो तरह की है

1. इज़ाफ़ते तरकीबी
2. इज़ाफ़ते तौसीफ़ी

1. जब इज़ाफ़त के दो लफ़्ज़ों के बीच का सम्बंध का – की से बताया जा सके तो ऐसी इज़ाफ़त को इज़ाफ़ते तरकीबी कहते हैं। जैसे –

وقتِ شام یعنی شام کا وقت

تاریکیِ شب یعنی شب کی تاریکی

بندۂ خُدا یعنی خدا کا بندہ

خوشبوئے گلاب یعنی گلاب کی خوشبو

2. जब इज़ाफ़त के लफ़्ज़ों को अलग न किया जा सके बल्कि इज़ाफ़त हटाने पर एक लफ़्ज़ दूसरे लफ़्ज़ की कोई विशेषता बताएं तो इसे तौसीफ़ी इज़ाफ़त या इज़ाफ़ते तौसीफ़ी कहेंगे। जैसे –

شامِ روشن یعنی روشنی بھری شام

شبِ تاریک یعنی تاریک شب

بندۂ بے دام یعنی بے دام (مفت) ملنے والا بندہ

گلاب سُرخ یعنی سُرخ گلاب

मश्क़—11

इन लफ़्ज़ो को इज़ाफ़त के बगैर लिखिये । यानी इज़ाफत हटा कर लिखिये ।

شامِ غم	آوازِ دل	ہمتِ جواں	بیمارِ عشق
شبِ روشن	خیالِ وطن	آزادیِ چمن	رحمتِ خدا
مرضِ لاعلاج	جذبۂ آزادی	جوشِ خدمت	نعرۂ انقلاب
تحفۂ یار	سلسلۂ وقت	سکّۂ حکومت	کرشمۂ قدرت
سزائے موت	دوائے مرض	جوشِ بوئے گلاب	جستجوئے یار
روئے محبوب	خوئے انسان	آرزوئے حیات	گفتگوئے دوست
آبِ جوئے گنگا	خیالِ آبروئے ہمت	دروازۂ جنّت	
قدرتِ حق	مالکِ کُل		

मश्क़—12

इन में इज़ाफ़ते तरकीबी और इज़ाफ़ते तौसीफ़ी को अलग अलग कीजिये

عہد قدیم	دلِ بیمار
عہد اکبر	آرزوئے ناکام
قیمتِ صغریٰ	دوائے بے اثر
روزِ قیامت	کوششِ ناکام
دلِ ناداں	خواہش ناآسودہ
دلِ عاشق	نصیب سیاہ
خیالِ یار	گلاب سُرخ
خیالِ پریشان	کُلاہِ کج
مردِ ناداں	گلشن ویران
مزاجِ نازک	حیوانِ ناطق
مرضِ عشق	زبانِ خاموش
مرضِ لاعلاج	وزیرِ اعلا
آبروئے وطن	مصنفِ وقت
وطنِ عزیز	رازِ حیات
شمعِ ہدایت	رازِ عیاں
شمعِ روشن	زبانِ رواں
	چمنِ حیات

लिखने की मश्क

जब शब्दों में उच्चारण की अवस्था इ+ए हो तो हमज़ा ء नहीं लिखना चाहिये बल्कि ی ا उच्चारण होता

इन शब्दों को देखिये और लिखिये

चाहिये	چاہیے	چ ا ہِ ی ے
बोलिये	بولیے	ب و ل ی ے
सोचिये	سوچیے	س و چ ی ے
पूछिये	پوچھیے	پ ؤ چھ ی ے
आइये	آیئے	آ اِ ی ے
जाइये	جایئے	ج ا اِ ی ے
लीजिये	لیجیے	لِ ی ج ی ے
पूजिये	پوجیے	پ ؤ ج ی ے
नहीं	نہیں	ن ہ ی ں
हैं	ہیں	ہ ئے ں
मैं	میں	م ئے ں
मे	میں	م ے ں
यहीं	یہیں	ی ہ ی ں
कहीं	کہیں	ک ہ ی ں

मश्क़—13

इनको उर्दू में लिखिये

1. चाय पीजिये तब जाइये।
2. आम के दाम दे दिये ?
3. आपने कितने आम लिये।
4. मैंने घर में ही खाना खाया।
5. कहीं न जाओं यहीं रहो।
6. आपको खाना नहीं चाहिये।
7. सोचिये फिर बोलिये।
8. मुझको कहीं नहीं जाना।
9. आप कहां है कुछ बताइये।
10. आइये जनाब आइये कुछ तो फर्माइये।
11. कोई गाना गाइये गज़ल सुनाइये।
12. सर पर न चढ़िये न चढ़ाइये।

मश्क़—14

इन हर्फ़ों को जोड़कर लिखिये—

अर्थ	लफ़्ज़
व्यक्तित्व	ش خ ص ی ت
मानवता	ا ن س ا ن ی ت
हैवानियत	ح ے و ا ن ی ت
विशेषता	خ ا ص ی ت
विशेषता	خ س و ص ی ت
पहचान	ت ش خ ی ص
जांच, खोज	ت ف ت ی ش
आलोचना	ت ن ق ی د
तावीज़	ت ع و ی ذ
स्वपणफल	ت ع ب ی ر
अवकाश	ت ع ط ی ل
शिक्षा	ت ع ل ی م
आदर, सम्मान	ت ع ظ ی م
गायब, लुप्त	م ع د و م
दुखी	م غ م و م
भोला भाला	م ع ص و م

मश्क–15

इन लफ़्जों को जोड़कर लिखिये–

असमनजस	ک ش م ک ش	....
वार्तालाप	س ل س ل ہ	....
खोज	گ ف ت گ و	....
भूकंप	ز ل ز ل ہ	....
रूआब	د ب د ب ہ	....
संपर्क	وَ ل وَ ل ہ	....
इच्छा	خ و ا ہ ش	....
रंजिश	چ پ ق ل ش	....
साधन	م خ د و ش	....
ज़रीया	و س ی ل ہ	....
महाराजा	ش ہ ن ش ا ہ	....
ठहाका	ق ہ ق ہ ہ	....
प्रिय	م ح ب و ب	....
सुरक्षित	م ح ف و ظ	....
मिला जुला	م ک ل و ط	....
श्रद्धा	ع ق ی د ت	....
घोल	م ح ل و ل	....
खोज	ج س ت ج و	....
संपर्क	و ا س ط ہ	....

इमला और अर्थ

अंग्रेजी की तरह उर्दू में भी ऐसे बहुत सारे शब्द है जो अर्थ और इमला के आधार पर तो अलग है लेकिन इनका उच्चारण समान लगता है।

फ़रेब – धोका	جعل
फंसाने का जाल	جال
नस्ल	نسب
स्थापित	نصب
औरत	زن
ख़्याल, सोच	ظن
गद्य	نثر
सहायता	نصر
उपाय	چارہ
जानवर का आहार	چارا
उत्तम	اعلا
यन्त्र	آلہ
परिंदा	باز
कुछ	بعض
कांटा	خار
नीच, जलाल	خوار
जानवर	شیر
कविता की पंक्तियां	شعر
आवाज़	صدا
सदैव	سدا
साधारण	عام
एक फल	آم
शून्य	صفر
यात्रा	سفر
देखना	بصر
गुज़रना	بسر
बाद में	بعد
हवा	باد
वंचित	عاری
एक यंत्र	آری
ग़म	الم
ध्वज	علم
धरती	ارض
विनती	عرض
मणि	لعل
एक रंग	لال
व्यायाम	کسرت
बहुतायत	کثرت
बंदूक की नाल	نال
घोड़े की नाल	نعل

आवाजों के अंतर वाले अक्षर से बने शब्द

کمر	قاش
قمر	گاش
طاق	قدم
تاک	کدم
ساغر	خار
ساگر	کھار
باغ	خان
باگ	کھان
مکرّر	جن
مقرر	زن
مکدّر	فن
مقدر	پھن
کاش	ذلیل
قاش	جلیل
گُل	ازل
غُل	اجل
گور	کول
غور	کھول

शब्द और माने

गयान	علم	कल्पना	تصوّر
गयाणी	عالم	चित्र	تصویر
गयान का लक्ष	معلوم	चित्रकार	مصور
न्याय	عدل	चित्रित	مصوّر
न्यायधीश	عادل	अत्याचार	ظلم
सूचना	خبر	अत्याचारी	ظالم
सूचक	مُخبر	पीड़ित	مظلوم
समाचार पत्र	اخبار	प्रतिक्षा	انتظار
चिकित्सा	طِب	प्रतिक्षा करने वाला	منتظِر
चिकित्सक	طبیب	जिसकी प्रतिक्षा की जाय	منتظَر
रचने वाला	خالق	आदेश	حکم
रचना	تخلیق	आदेश करने वाला	حاکم
रचा हुआ	مخلوق	आदेश का पात्र	محکوم
		रक्षक	حافظ
		रक्षक	محافظ
		रक्षा	حفاظت
		सुरक्षित	محفوظ

हकारी और ग़ैर हकारी Consonants के फ़र्क पर गौर करते हुए इन लफ़्ज़ों को जोर से पढ़िये और लिखिये।

تھال	تال	گُھل	گُل
پھل	پَل	ٹھاٹھ	ٹاٹ
تھل	تلی	ڈھول	ڈول
پھٹ	پٹ	بھاگ	باگ
تھالی	تالی	کھانا	کانا
بھاپ	باپ	گُھن	گُن
تھاپ	تاپ	کھیل	کیل
تھن	تن	چھال	چال
پھن	پن	باڑھ	باڑ
کھڑا	کڑا	پڑھا	پڑا
گِھرا	گِرا	چھاگ	جاگ
دھمک	دمک	دھان	دان
چھنا	چنا	چھین	چین
دھر	در	ڈھال	ڈال
کھنک	کنک	ڈھاک	ڈاک
گھولہ	گولہ	دھار	دار
		کھیلا	کیلا
		کھیل	کیل

इन जुमलों को पढ़िये और मानो का फ़र्क समझायें

۱	آپ آیئے	تشریف لایئے
۲	آیئے بیٹھئے	آیئے تشریف رکھیے
۳	آپ کیسے ہیں	آپ کا مزاج شریف؟
۴	آپ کا نام کیا ہے۔	آپ کا اسم شریف؟
۵	آپ کا گھر کہاں ہے؟	آپ کا دولت خانہ کہاں ہے؟
٦	میرے گھر آیئے۔	غریب خانہ پر تشریف لایئے
۷	آپ کے گھر آؤں گا	آپ کے دولت خانے پر حاضر ہوں گا
۸	کچھ کہیے	ارشاد فرمایئے
۹	میں کچھ کہوں؟	میں کچھ عرض ہووں
۱۰	میری بات سنیے	میری عرض سنیے
۱۱	میں کہاں ہوں	میں کیا عرض ہووں
۱۲	آپ کی مدد کا شکریہ	کرم فرمائی کا شکریہ
۱۳	میں اپنی بات کہنا چاہتا ہوں	میں گزارش کرنا چاہتا ہوں
۱۴	آیئے کھانا کھایئے	تشریف لایئے۔ ماحضر تناول فرمایئے
۱۵	آپ کی مدد کا شکریہ	بندہ نوازی کا شکریہ

۱	ایک	۲۱	اکیس	۴۱	اکتالیس	۶۱	اِکسٹھ
۲	دو	۲۲	بائیس	۴۲	بیالیس	۶۲	باسٹھ
۳	تین	۲۳	تیئیس	۴۳	تینتالیس	۶۳	ترسٹھ
۴	چار	۲۴	چوبیس	۴۴	چوالیس	۶۴	چوسٹھ
۵	پانچ	۲۵	پچیس	۴۵	پینتالیس	۶۵	پینسٹھ
۶	چھے	۲۶	چھبیس	۴۶	چھیالیس	۶۶	چھیاسٹھ
۷	سات	۲۷	ستائیس	۴۷	سینتالیس	۶۷	سڑسٹھ
۸	آٹھ	۲۸	اٹھائیس	۴۸	اڑتالیس	۶۸	اڑسٹھ
۹	نو	۲۹	اُنتیس	۴۹	اُنچاس	۶۹	اُنہتر
۱۰	دس	۳۰	تیس	۵۰	پچاس	۷۰	ستّر
۱۱	گیارہ	۳۱	اکتیس	۵۱	اکیاون	۷۱	اکہتر
۱۲	بارہ	۳۲	بتیس	۵۲	باون	۷۲	بہتّر
۱۳	تیرہ	۳۳	تینتیس	۵۳	ترپن	۷۳	تہتّر
۱۴	چودہ	۳۴	چونتیس	۵۴	چوّن	۷۴	چوہتّر
۱۵	پندرہ	۳۵	پینتیس	۵۵	پچپن	۷۵	پچھتّر
۱۶	سولہ	۳۶	چھتیس	۵۶	چھپّن	۷۶	چھہتّر
۱۷	سترہ	۳۷	سینتیس	۵۷	ستاون	۷۷	ستہتّر
۱۸	اٹھارہ	۳۸	اڑتیس	۵۸	اٹھاون	۷۸	اُٹھہتّر
۱۹	اُنیس	۳۹	انتالیس	۵۹	اُنسٹھ	۷۹	اُنیاسی
۲۰	بیس	۴۰	چالیس	۶۰	ساٹھ	۸۰	اسّی

۸۱	اکیاسی	۱۰۰	سو
۸۲	بیاسی	۱۰۰۰	ہزار
۸۳	تراسی	۱۰۰۰۰	دس ہزار
۸۴	چوراسی	۱۰۰۰۰۰	سو ہزار
۸۵	پچاسی	۱۰۰۰۰۰	لاکھ
۸۶	چھیاسی	۱۰۰۰۰۰۰	دس لاکھ
۸۷	ستاسی	۱۰۰۰۰۰۰۰	سولاکھ
۸۸	اَ ٹھاسی	۱۰۰۰۰۰۰۰	کروڑ
۸۹	نواسی	۱۰۰۰۰۰۰۰۰	دس کروڑ
۹۰	نوّے	۱۰۰۰۰۰۰۰۰۰	سو کروڑ
۹۱	اکیانوے	۱۰۰۰۰۰۰۰۰۰	ارب
۹۲	بانوے		
۹۳	ترانوے		
۹۴	چورانوے		
۹۵	پچانوے		
۹۶	چھیانوے		
۹۷	ستانوے		
۹۸	ا ٹھانوے		
۹۹	نیانوے		
۱۰۰	سو		

دنوں کے نام

Monday	सोमवार	سوموار
Tuesday	मंगलवार	منگل
Wednesday	बुधवार	بدھ
Thirsday	बृहस्पतिवार	جمعرات
Friday	शुक्रवार	جمعہ
Saturday	शनिवार	سنیچر
Sunday	रविवार	اتوار

مہینے

January	जनवरी	جنوری
February	फरवरी	فروری
March	मार्च	مارچ
April	अप्रैल	اپریل
May	मई	مئی
June	जून	جون
July	जुलाई	جولائی
August	अगस्त	اگست
September	सितम्बर	ستمبر
October	अक्टूबर	اکتوبر
November	नवम्बर	نومبر
December	दिसम्बर	دسمبر

ث

ثابت	सिध्घ
ثبوت	प्रमाण
اثبات	हामी
اثر	प्रभात
تاثیر	प्रभाव
اثاثہ	धन दौलत
ثبت	स्थापित काम
آثار	लक्षण
ثمر	फल
ثالث	तीसरा
حیثیت	रुतबा
ثبات	सिथिरता
نثر	गद्य
نثّار	गद्य के लेखक
تانیث	स्त्रिलिंग
میراث	बाप दादा की संपत्ति
حدیث	हज़रत मौ० के कथन

س

سادہ	सादा
تسلیم	सविकार
رسید	रसीद
ریاست	राज्य
رئیس	अमीर
رُستم	परम्परा
جست	छलांग
دست	हाथ
قَسم	सौगंध
قِسمت	भाग्य
خسارہ	हानी
فساد	दंगा
خستہ	पुराना टूटा
شکست	हार
حساب	गण्ति
حسرت	अर्मान
سکون	संतुष्टि
استعمال	प्रयोग
مستقل	स्थाई
مستقبل	भविष्य
سَدا	सदा
سہرا	शादी में पहन्ने वाला सहरा

ص

صاف	स्वच्छ
صندوق	बक्सा
صفائی	सफाई
صدف	सीपी
صنم	मुर्ति
تصویر	चित्र
تصوّر	कल्पना
مصوّر	चित्रकार
مصوَّر	जिस्का चित्रण
خاص	प्रमुख
خاصیت	विशेषता
خصوصیت	विशेष
رقص	नृत्य
رقّاصہ	नृतकी
انصاف	न्याय
مصنّف	लेखक
مُنصف	न्यायधीश
قاصد	सूचना देने वाला
صدا	आवाज़
صحرا	रेगिस्तान
قصو	संकल्प

उपसर्ग वाले कुछ अल्फ़ाज

بے	لا	بد
بےکار	لاجواب	بدنام
بےگھر	لازوال	بدنظر
بےوفا	لاعلاج	بدکار
بےنام	لامکاں	بدمعاش
بےخطا	لادوا	بدنصیب
بےنوا	لاپتہ	بدقسمت
بےحیا	لاوارث	بدکردار
بےوطن	لاحاصل	بددل
بےدرد	لاثانی	بدرنگ
بےدل	لافانی	بددماغ
بےرنگ	لاولد	بدزبان
بےبس	لامقصد	بدتمیز
بےحال	لاسُراغ	بدنما
بےعزّت	لاٹھکانہ	بدذات
بےغیرت		بدحال
بےحواس		بدصورت
بےہوش		بدعقل
بےخوف		بدشکل
بےباک		بدخصلت
بےچین		بداطوار
		بدسلیقہ
		بدحواس
		بدقماش

ز

زہر	विश
زور	ताक़त
درزی	दरज़ी
مزا	आनन्द
سزا	दण्ड
عزّت	प्रतिष्ठा
مزار	कब्र
موزہ	पैतावा
چوزہ	मुर्ग़ी का बच्चा
وزیر	मंत्री
چیز	वस्तु
روزہ	उपवास
نماز	नमाज़
زوجہ	पत्नी
بزم	सभा
ازل	सृष्टी का पहला दिन
بزرگ	बुज़ुर्ग
بزم گاہ	मस्ती की जगह
جزیرہ	टापू
جزا	कर्म फल
الزام	आरोप

ظ

ظاہر	प्रकट
نظر	नज़र
نظیر	उदाहरण
نظم	कविता
ناظم	व्यवस्थापक
ظرافت	हंसी मज़ाक़
ظرف	बर्तन, हौस्ला
ظلم	अत्याचार
ظفر	सफलता
عظیم	माहान
مظلوم	अत्याचार सहने वाला
مظاہرہ	प्रर्दशन
ظہر	तीसरा पहर
نظریہ	दृष्टिकोण
نظامت	व्यवस्था
وظیفہ	पेन्शन

ذ

ذہن दमाग़
مذہب धर्म
تذبذب अस्मंजस
ذکر चर्चा
تذکیر पुलिग
ذلیل नीच
تذکرہ चर्चा
جذبہ भावना
جذبات भावनाऐं
رذیل नीच
عذر बहाना
عذاب पाप डंड
غذا आहार
لذّت स्वाद
لذیذ स्वादिष्ठ
مذاق दिल्लगी
ذبح हलाल करना
مذمّت बुरा भला कहना
مذبح ज़िबह करने की जगह

ض

ضد हठ
ضمانت ज़मानत
ضلع ज़िला
ضبط संयम
ضرب चोट, मार
ضیا प्रकाश
ضعیف बूढ़ा
ضرورت आव्यशक्ता
فضول व्यर्थ
فضا माहौल
فصیل चारों और की दिवार
قضا मौत
قرض धर्म
فرض कर्तव्य
حوض हौज़
غضب गज़ब
راضی सहमत
رضائی रज़ाई
مرض बीमारी
مریض बीमार

ت

تاش	ताश
تلاش	तलाश
تلاوت	ज़ोर ज़ोर से पढ़ना
تلخ	कड़वा
تعارف	परिचय
شُترمُرغ	एक बड़ा पक्षी
انتخاب	चयन
امتحان	परिक्षा
تلوار	तलवार
تحریر	तहरीर
تماشا	तमाशा
بتاشا	बताशा
تمدّن	संस्कृति
تہذیب	सभ्यता
تخت	सिंघासन
تاج	मुकुट
تعلیم	शिक्षा
تعجّب	अचंभा
تعطیل	आम अवकाश
ترازو	तराजू
توازن	संतुलन

ط

طاقت	ताक़त
شاطِر	शातिर
سطر	रेखा
شطرنج	शतरंज
سطح	ऊपरी भाग
خط	चिट्ठी
خطا	दोष
خطرہ	ख़तरा
فطرت	प्रक्रिति
عطا	बख़शिश
عِطر	सुगंन्धित तेल
عطّار	इत्र बेचने वाला
طرف	ओर
طرار	चालाक
طرح	प्रकार
طریقہ	तरीक़ा
طاق	ताख़
طلاق	तलाक़
طفل	बच्चा
طواف	परिकर्मा
طوائف	नाचने वाले स्त्री
طیارہ	हवाई जहाज़
طویل	बड़ा
طوفان	तूफ़ान

ح

حل	समाधान
حلال	उचित
حماقت	मूर्खता
حملہ	अक्रमण
حاصل	प्रयाप्त
حوالات	बंदी घर
حوالدار	पुलिस कर्मचारी
محلول	मिशरण
حیا	शर्म, लाज
حیوان	जानवर
حیات	जीवन
حیلہ	बहाना
محل	महल
صحن	आंगन
رحم	दया
رحمت	ईशवर कृपा
رحلت	मृत्यू
زحمت	कष्ट
سَحر	प्रातः
سِحر	जादू
حج	हज
حاجی	हाजी
حجاب	पर्दा

ہ

ہضم	पाचन
ہاضمہ	पाचन कृया
ہلال	चांद
ہدیہ	भेंट
ہدایت	आदेश
جہیز	दहेज
جہالت	निर्क्षता
جاہل	अनपढ़
جہنّم	नर्क
چہلُم	चालास
ذہن	समक्ष
ذہین	तेज़
جہان	सुंसार
جہاز	जहाज़
مہک	महक
تہہ خانہ	तहख़ाना
تہلکہ	हंगामा
تہجّد	रात को जाग कर पढ़ने वाली नमाज
تہمت	आरोप
جہاد	जहाद
دہقان	किसान

सबक़

نہ ہم سخن کوئی اپنا نہ رازداں اپنا
کہیں تو کس سے کہیں حالِ دل یہاں اپنا

وہ لوگ جو بنے رہزن ہمارے اپنے تھے
سمجھ لیا تھا جنھیں ہم نے پاسباں اپنا

یہ کس جگہ ہمیں لائی ہے گردشِ دوراں
جہاں نہ ہم نفس اپنا نہ ہم زباں اپنا

نظر اُٹھا کے کسی نے جو ہم کو دیکھا ہے
اُسی کو جان لیا ہم نے مہرباں اپنا

تمہارا درد یہاں کوئی کچھ نہ سمجھے گا
نہ پتّھروں سے کرو کوئی غم بیاں اپنا

सबक़ पढ़िये

شام سے ہی بُجھا سا رہتا ہے
دِل ہوا ہے چراغِ مفلس کا

مفلسی سب بہار کھوتی ہے
مرد کا اعتبار کھوتی ہے

جتنی بری کہی جاتی ہے اتنی بری نہیں ہے دنیا
بچوں کے اسکول میں شاید تم سے نہیں ملی ہے دنیا

آدمی کے پاس مال و زر تو اچھا ہے مگر
آدمی نیّت کا بھی زردار ہونا چاہیے

ہے خبر گرم اُن کے آنے کی
آج ہی گھر میں بوریا نہ ہوا

وہ آئیں گھر میں ہمارے خدا کی قدرت ہے
کبھی ہم اُن کو کبھی اپنے گھر کو دیکھتے ہیں

وتیرہ ہے یہی دنیا کا اس سے جی نہ چھوڑا اے دل
بُرائی پیٹھ پیچھے روبرو تحسین ہوتی ہے

کہانی-۱

اپنے آشیانے کے قریب کھڑی ہوئی چڑیا اُداس تھی۔ شام ہو رہی تھی اور اس کے بچے ابھی تک واپس نہیں لوٹے تھے۔ فکر سے پریشان ہوئی جاتی تھی کہ نادان بچے نہ جانے کہاں ہوں گے، بھٹک رہے ہوں گے۔ کسی حادثے کا شکار تو نہیں ہو گئے۔ تھوڑی دیر میں چڑا ابھی آ گیا لیکن بچے نہیں آئے۔ چڑیا اور بھی پریشان ہو گئی۔ چڑے کو بھی تردّد میں ڈال دیا۔ لیکن چڑا زندگی کے کچھ اصولوں سے واقف تھا جن سے چڑیا انجان تھی۔

چڑے نے چڑیا کو سمجھایا کہ کل تک آ جائیں گے کہیں دور نکل گئے ہوں گے۔ تُم سو جا۔ چڑیا چُپ تو ہو گئی، سو نہیں سکی۔

صبح ہوتے ہی وہ گھونسلے سے باہر آ گئی۔ بچوں کے لیے اس کا دل تڑپ رہا تھا۔ کل ہی تو انھوں نے روانی سے اُڑنا سیکھا تھا۔ پہلی اُڑان پر دونوں نکلے تھے، نہ جانے کیا ہوا ہوگا۔ چڑیا ہول کھا رہی تھی۔ اچانک اُس کی نظر پیڑ پر رُکی، دونوں بچے ایک نئے گھونسلے سے نکلے اور ساتھ ساتھ اُڑان بھری اور نظروں سے اوجھل ہو گئے۔

کہانی-۲

آسمان پر صبح کے آثار شروع ہوئے نہیں کہ نانی اماں نے صور پھونکا۔ ''ارے اُٹھو..........علیزا............علینا...............صبح ہونے کو آئی ہے۔ تمثیل اور شایان کو بھی جگا دو۔ یہ تو رات میں سونے کا نام ہی نہیں لیتے۔ ٹی وی ہے اور یہ ہیں۔ یہ لوگ تو یہ بھی بھول جاتے ہیں کہ صبح اسکول کے لئے تیار ہونا ہے۔ اسکول کی بس نہ اسکول کوئی مرّوت کرے گا۔ وقت پر بلکہ وقت سے پہلے پوں-پوں کی رٹ لگا دے گی بس۔ اُٹھو..........اُٹھو......شیطانوں.... جلدی کرو......دیکھو سورج نکلنے ہی والا ہے''۔ نانی نے پاندان سنبھالا اور ان کی آواز کچھ اور بلند ہو گئی مگر بچوں کے کانوں پر جوں تک نہ رینگی۔ پھر انہوں نے اپنی بہو اور بیٹی کو پکارا..........ارے نغمہ.......ڈیزی کیا ابھی تک سوتی رہو گی۔ بچوں کو جگا دو..... بیٹا اسکول بس آجائے گی تو یہ سب بھوکے پیاسے بھاگ لیں گے.....اسکول کی بس تو کوئی لاڈ کرنے سے رہی......بس ان کے کھانے پر ہی آفت آئے گی۔ نانی اماں روانی سے بولتی رہتی تھیں۔ بس ذرا پان کو منہ میں کروٹ بدلنے کا موقع دیا تھا کہ ان کی بیٹی ڈیزی نیند میں بوکھلائی

آ پہنچیں......ارے اماں آج اتوار ہے۔کل بھی اسکول بند ہے۔ ذرا دیر کو اور سو لینے دیجیے ۔ بچوں کو نیند ہی نہیں ملنے پاتی، ان بیچاروں کو۔ نانی اماں شرمندہ سی ہوگئیں کہ انھیں خیال نہ رہا کہ بچوں کی دو دنوں کی چھٹیاں ہیں لیکن وہ سب کو کیسے بتاتیں کہ بچوں کے شور شرابے کے بغیر گھر کتنا اُداس لگتا ہے۔ بچے قیامت سہی لیکن جب سوتے رہتے ہیں تو گھر کتنا بے رونق ہو جاتا ہے۔

ان لفظوں کو لکھنے کی مشق کیجیے:

قیامت	آفت
شرمندہ	بے رونق
شور شرابہ	روانی
بلند	موقع
صور	مروّت

کہانی-۳

شیر جنگل کا راجا کہلاتا ہے۔ سب کے سب جانور شیر سے خوف کھاتے ہیں۔ چھوٹے موٹے جانور کو تو چھوڑو۔ بڑے ہاتھی جیسے جانور بھی اس سے کتراتے ہیں کیونکہ اگر ایک بار وہ نرغے میں آ گئے تو پھر ان کی جان بچنی محال ہے۔

لومڑی شیر سے ڈرتی تو بہت تھی لیکن شیر کی تانا شاہی اسے قطعی پسند نہیں تھی۔ اپنے جیسے کمزور جانوروں کے لیے اس کا دل بہت کڑھتا تھا۔ بے چارے کب شیر کی زیادتی اور بھوک کا شکار ہو جائیں کچھ ٹھیک نہیں۔
میں تو اپنی چاپلوسیوں سے اپنی جان بچا لیتی ہوں لیکن سب کو یہ فن کہاں آتا ہے۔ لومڑی سوچتی۔۔۔۔۔

شیر کو مزا چکھانے کا اس کا ارادہ بہت قوی تھا بلکہ دن بدن مضبوط ہوتا جا رہا تھا اور ایک دن اسے موقعہ مل ہی گیا۔ شیر کے ساتھ چلتے چلتے اس نے گفتگو شروع کی ارے سرکار کل میں نے آپ سے بھی بڑے شیر کو دؤر جھاریوں میں ٹہلتے دیکھا میں تو ڈر گئی۔۔۔۔ شیر کے کان کھڑے ہو گئے۔ مجھ سے بڑا شیر کون ہو سکتا ہے۔ اس نے تشویش سے سوچا۔
لومڑی کو کچھ اور حوصلہ ہوا حضور میں دیکھا خوب اکڑ اکڑ کر گھوم رہا تھا۔ پتہ

نہیں کہاسے آگیا ہے۔خدا خیر کرے۔
شیر کو غصّہ آگیا۔کہاں ہے چلو دیکھوں تو اسے کتنا بہادر ہے۔
چلیے حضور میں لے چلتی ہوں۔لومڑی کا دل دھڑ کنے لگا کامیابی قریب نظر آئی۔
وہ شیر کے ساتھ ساتھ چلی اور چلتی رہی بہت دؤر ایک کنوا تھا اسنے دیکھ رکھا تھا کنویں کے نزدیک جا کر اس کے اندر جھانکا اور ڈرنے کی اداکاری کی۔۔ دیکھیے حضور اس کے اندر کتنا بڑا شیر ہے شاید آپ پر حملہ کرنے کے موڈ میں ہے۔لومڑی پیچھے ہٹ گئی۔شیر غصّے میں آگے بڑھا کنویں میں جھانکا۔ شفّاف پانی میں اسے اپنا عکس دکھائی دیا۔لیکن لومڑی کی بات کی روشنی میں وہ اس عکس کو اپنا حریف سمجھ بیٹھا۔اور زور سے غُرّایا۔جواب میں عکس بھی غرّایا۔ بس پھر کیا تھا شیر نے آؤ دیکھا نہ تاو اور چھپاک سے کنویں میں چھلانگ لگا دی۔۔لومڑی نے اطمینان کی سانس لی۔جنگل کے بے شمار جانوروں کو خوف سے نجات ملی۔
لکھیے :۔نشان لگے لفظوں کو لکھیے اور معنی بتایئے۔

نرغے - محال - قطعی - فن - قوی

مضبوط - موقعہ - گفتگو - حوصلہ

تشویش - بے رونق - عکس - غرّایا

حریف - نجات - خوف

Dates

दाईं से बाईं तरफ़ लिखते हुए, पहले तिथि, फिर मास और अंत में वर्ष लिखा ज़ाता है। उर्दू में वर्ष का पूरा वर्णन एक निशान ؁ के ऊपर होता है जिसे 'सन' कहते हैं और यह वर्ष या साल का संकेत है।

15 अगस्त ۱۵؍اگست ۱۹۴۷ء

2 अक्तूबर ۲؍اکتوبر ۱۹۶۶ء

26 जनवरी ۲۶؍جنوری ۱۹۵۰ء

1947 A.D.	(AD)	۱۹۴۷ء
1804 A.D.	(A.D.)	۱۸۰۴ء
1412 BC	(BC)	۱۴۱۲ق-م
1460 A.H	(AH)	۱۴۶۰ھ
1940 SAKA	(SAKA)	۱۹۶۰شک

۱۵؍رمضان المبارک ۱۴۷۰ھ

۱۵؍رجب ۱۴۶۰ھ

इन जुमलों को पढ़िये और लिखिये

۱۔ مجھے آپ سے کئی سوال پوچھنے ہیں۔

۲۔ راشد کو کسی ڈاکٹر سے ملنا ہے۔

۳۔ حامد کو اس سال امتحان دینا ہے۔

۴۔ اُن لوگوں کو اس گھر میں ضرور آنا ہے۔

۵۔ مجھے دہلی میں چچا کے گھر ہی ٹھہرنا ہے۔

۶۔ آپ کو مال سے کیا کچھ خریدنا ہے؟

۷۔ زاہد کو جلد ہی اپنا گھر بیچنا ہے۔

۸۔ انوار کو اُس جھیل میں تیرنا اور نہانا ہے۔

۹۔ اُسے بس اس موقعے کو ٹالنا ہے۔

۱۰۔ گھر سے جلدی نکلو اگر اُس شخص سے ملنا ہے۔

इन वाक्यों को पढ़िये और उर्दू में लिखिये

1– आप अपना नाम बताइये।

2– ऐसा सवाल मत पूछिये।

3– कालिज जाना न छोड़िये।

4– अपनी किताब दोस्त को भी दीजिये।

5– किसी को अपना पता अब बताइये।

6– रात भर बाहर न रहिये।

7– घड़ी घड़ी कहीं न जाइये।

8. किताबें ख़रीद कर पढ़िये, मांगिये मत।

9– ऐसी बातें मत सोचिये।

10– अब आप बाहर न आइये।

11– सेब मीठे हैं खाइये।

12– वक़्त कभी ख़राब मत कीजिये।

13– कोई ख़तरा मोल तो लीजिये।

14– किसी नाकामी पर कभी न रोइये।

15– हर फ़िक्र को टाल कर बाहरी नींद सोइये।

सबक़

उर्दू मकें अक्सर ज़्यादा इस्तेमाल किये जाने वाले कुछ विराम (Punctuation Marks) ये हैं।

1– जब किसी शेर का मिस्रा लिखा जाता है – ؏

2– तब कोई शेर लिखा जाए तो – ؎

3– तब शायर अपना उपनाम शेर में लिखता है तो यह निशान उस नाम के ऊपर लगता है – ؔ

4– प्रश्न के लिये ? (Question Mark)

5– फुट नोट के लिये ؂ (Footnote)

6– छोटे विराम के लिये ، (Comma)

7– पूरे विराम के लिये ۔ (Full Stop)

इन चिन्हों को प्रयोग करते हुये एक छोटा सा उदाहरण लिखिये।

मश्क़ (पढ़िये)
(मिसालें)

۱- میری یہاں کون سنتا ہے، مجھ سے بھی کُچھ پوچھیے ع

میں بھی مُنھ میں زبان رکھتا ہوں

۲- بھئی آپ کا کیا کہنا، آپ جو چاہیں کر سکتے ہیں، کیونکہ ؎

ہم آہ بھی کرتے ہیں تو ہو جاتے ہیں بدنام

وہ قتل بھی کرتے ہیں تو چرچا نہیں ہوتا

۳- بقول غالب ؎

پوچھتے ہیں وہ کہ غالبؔ کون ہے

کوئی بتلاؤ کہ ہم بتلائیں کیا

۴- دِلِ ناداں تجھے ہوا کیا ہے؟

آخر اس درد کی دوا کیا ہے؟

۵- Footnote وہاں لگایا جاتا ہے جہاں کسی بات کا حوالہ الگ سے دیا جاتا ہے۔

۶- (الف) اُلٹی ہو گئیں سب تدبیریں، کچھ نہ دوا نے کام کیا

(ب) آپ تشریف لائیے، کچھ باتیں کرنی ہیں۔

۷- صبح ہو گئی ہے۔ کرنے کو بہت سے کام ہیں۔ مجھے فرصت بالکل نہیں ہے۔

ABOUT THE BOOK

Learning a language with reading and writing skill takes time and needs dedication too. A multi lingual country like India has vast scope of learning several languages as second language. Urdu is one of them, most popular language that is being learnt as second language in this country very commonly.

But learning a language as second language must has some practical, aspirational, some intellectual and some time sentimental reason or ground, that motivate some one to learn and study any language. A big population of India speak and understand Urdu but cannot read and write the script.

A language without script is life without inspiration of life.

This book deals with teaching script of Urdu. Learning this script is not a difficult task. Just go on, and take a chance to learn it but with interest and dedication please.

Designed & Printed At: Nomani Printing Press, Lko. Cell: 9794593055